ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

वैदिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का संवाहक

स्वामी दयानन्द सरस्वती

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का मुख पत्र

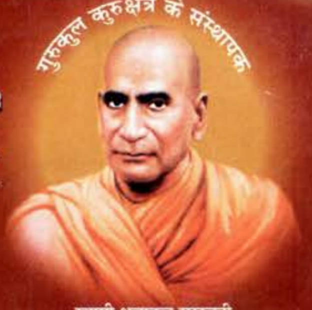

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

आश्विन वि. स. २०७४ • कलियुगाब्द ५११८ • वर्ष : ०४ • अंक : ०९ • सितम्बर २०१७

'महामहिम से मिले महामहिम'

हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने महामहिम राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद जी को 'राष्ट्रपति भवन' में भेंट कर शुभकामनाएं दीं

स्वामित्व :

गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा)-136 119

(केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली से 10+2 तक सम्बद्ध)

दूरभाष: 01744-238048, 238648

E-mail : kurukshetragurukul@gmail.com Website : www.guruk[illegible]urukshetra.com

AN ISO 2008 CERTIFIED INSTITUTE

माइक्रोटेक एंड ओकाया पॉवर कंपनी के निदेशक सुबोध गुप्ता का स्वागत करते हुए गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी जी

केन्द्रीय कृषि मंत्री राधामोहन सिंह जी से भेंट कर प्राकृतिक कृषि को बढ़ावा देने पर चर्चा करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

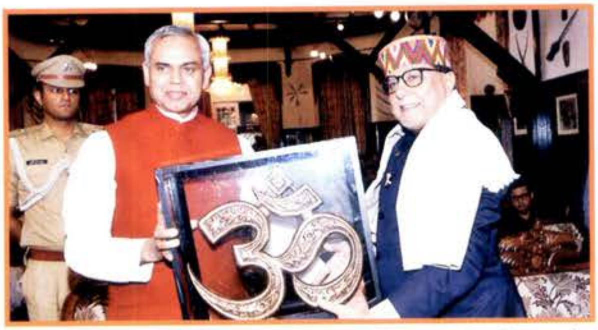

राजभवन में 'संवाद श्रृंखला' में विशेष रूप से पधारे सांसद एवं एस्सेल ग्रुप के अध्यक्ष डॉ. सुभाष चन्द्रा को सम्मानित करते हुए राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

पानीपत के इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी संस्थान में 'डॉ. ए. पी.जे. अब्दुल कलाम सभागार' का उद्घाटन करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

कुरुक्षेत्र की डिप्टी डीईओ नमिता कौशिक को सम्मानित करते हुए राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी, प्रधान कुलवंत सैनी, कर्नल अरुण दत्ता, शमशेर सिंह व वेद प्रचार विभाग के प्रचारक

राजभवन में आयोजित 'अलंकरण समारोह' में हिमाचल प्रदेश पुलिस के सम्मानित अधिकारियों के साथ आचार्य देवव्रत जी व सीएम वीरभद्र सिंह जी

शिमला के मशोबरा स्थित भागी जुब्बड़ में वन महोत्सव कार्यक्रम में स्कूली बच्चों तथा वन अधिकारियों के साथ आचार्य देवव्रत जी व लेडी गर्वनर श्रीमती दर्शना देवी

केन्द्रीय आलू संस्थान शिमला में फसल सुधार पर आयोजित '21 दिवसीय ग्रीष्मकालीन पाठशाला' के दौरान पुरस्कार वितरित करते हुए आचार्य देवव्रत जी

शिमला के जिला बागवानी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र में किसानों से 'जीरो बजट प्राकृतिक कृषि' अपनाने का आह्वान करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

'सम्पादक परिवार'

संरक्षक : आचार्य देवव्रत
(महामहिम राज्यपाल, हि. प्र.)
मुख्य संपादक : कुलवंत सिंह सैनी
मार्गदर्शक : विश्वबंधु आर्य
प्रबंध-संपादक : शमशेर सिंह
सह-संपादक : आचार्य सत्यप्रकाश
सूबेप्रताप आर्य
सुखविन्द्रपाल आर्य
नंदकिशोर आर्य
कानूनी सलाहकार : राजेन्द्र सिंह 'कलेर'
वित्तीय सलाहकार : सतपाल सिंह
पत्रिका व्यवस्थापक: राजीव कुमार आर्य
वितरण व्यवस्थापक: समरपाल आर्य
: अशोक कुमार

गुरुकुल भूमिदाता
सेठ ज्योति प्रसाद जी

आवश्यक सूचनाएं

1. **'गुरुकुल दर्शन'** मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखकों के हैं, संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्याय-क्षेत्र कुरुक्षेत्र होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के अन्दर ही मानी जाएगी।
2. पत्रिका के विलम्ब अथवा अनियमित रूप से मिलने की स्थिति में चलभाष 8689002402 पर सूचना देवें। पत्रिका के सम्बन्ध में आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव की हमें अपेक्षा रहेगी।

- संपादक

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृ.सं.
1.	सम्पादकीय : जीवन में एक पेड़ अवश्य लगाएं	02
2.	समाजसेवा को समर्पित एक राज्यपाल : आचार्य देवव्रत	03
3.	गृहस्थ-आश्रम	04
4.	ऋषि ने निर्भीकता से वेद का प्रचार किया	06
5.	जानिए क्या है सत्यार्थ प्रकाश ?	08
6.	वेदों से उपजे मूल्य	09
7.	संतानों को गुरुकुल में क्यों पढ़ाएं ?	11
8.	रिफाइंड ऑयल: आपके स्वास्थ्य से खिलवाड़	12
9.	कोई भी कार्य करने से पहले विचार करें	14
10.	वैदिक वर्ण-व्यवस्था	15
11.	फल की चिन्ता	17
12.	चल उड़ जा रे पंछी	18
13.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ	19
14.	गुरुकुल का वेद प्रचार विभाग कर रहा है समाज...	20
15.	गुरुकुल समाचार	22
16.	गुरुकुल समाचार	23
17.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय	24

हर एक को अपना मोक्ष स्वयं बनाना होता है, उसे अपनी राह बनानी पड़ती है।

संपादकीय

जीवन में एक पेड़ अवश्य लगाएं

पेड़-पौधे हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं। ईश्वर व प्रकृति ने एक वरदान के रूप में हमें पेड़-पौधों को प्रदान किया है मगर आज हम अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए प्रकृति की इस अमूल्य धरोहर की उपेक्षा कर रहे है, न केवल उपेक्षा कर रहे हैं बल्कि अपने छोटे से लाभ के लिए प्रकृति के विरुद्ध जाकर पेड़-पौधों को काटकर भारी विनाश कर रहे हैं। प्रत्येक पेड़ में कोई न कोई औषधीय गुण अवश्य छिपा हुआ है। ऐसे में पेड़-पौधे हमारे लिए उपयोगी ही नहीं अपितु प्रकृति की अमूल्य भेंट हैं।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि पेड़ हमारे मित्र हैं। पेड़ों से हमें न केवल जीवनदायिनी ऑक्सीजन प्राप्त होती है बल्कि ईंधन व इमारती लड़की भी प्राप्त होती है। कई पेड़-पौधों से हमें पशुओं के लिए चारा भी मिलता है। इतना ही नहीं कई पेड़-पौधों के पत्ते, छाल, जड़ इत्यादि का उपयोग औषधि के रूप में भी किया जाता है। हमारे जीवन के लिए इतने उपयोगी होने के बाजवूद भी हम पेड़-पौधों के महत्त्व को नहीं समझ पा रहे और अंधाधुंध कटाई कर प्रकृति और वातावरण को भी नुकसान पहुँचा रहे हैं।

प्राचीनकाल से ही हमारे पूर्वज पीपल के पेड़ की परिक्रमा करते रहे हैं। इससे कोई चमत्कार या कोई उपचार आदि नहीं होता बल्कि इसे पीछे वैज्ञानिक कारण यह है कि पीपल का वृक्ष वातावरण में फैली कार्बन डाइऑक्साइड लेता है और ऑक्सीजन छोड़ता है। ऑक्सीजन का हमारे शरीर, हमारे जीवन के लिए क्या महत्त्व है, यह सभी को ज्ञात है। ऑक्सीजन के बिना हम सांस भी नहीं ले सकते, ऑक्सीजन के बिना हम कुछ मिनट ही जिन्दा रह सकते है, ऑक्सीजन के बिना हमारी मृत्यु निश्चित है। इतनी महत्त्वपूर्ण ऑक्सीजन पीपल के वृक्ष से सबसे ज्यादा मात्रा में उत्सर्जित होती है, पीपल का वृक्ष सबसे ज्यादा ऑक्सीजन छोड़ता है, इसीलिए इसकी परिक्रमा आदि करने से कई रोग ठीक होने का दावा किया जाता है। हालांकि रोग ठीक होते है या नहीं ये अलग विषय है मगर प्रचुर मात्रा में ऑक्सीजन मिलने से और सैर (परिक्रमा) से हमारा शरीर स्वस्थ अवश्य रहता है।

दु:ख की बात है कि प्रतिवर्ष सरकार व समाजसेवी संस्थाओं द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रमों के तहत लाखों की संख्या में पेड़ लगाये जाते हैं। वृक्षारोपण कार्यक्रमों पर अरबों की राशि खर्च होती है मगर उसके बावजूद पेड़ों का संरक्षण नहीं हो रहा है। कुछ संस्थाएं और समाजसेवी तो वर्षभर वृक्षारोपण का यह पुनीत कार्य करते हैं। जन्मदिवस, विवाह-समारोह, जन्मोत्सव, विवाह-वर्षगांठ इत्यादि कोई भी शुभ अवसर हो, वृक्षारोपण करते व करवाते हैं जिससे हमारा प्राकृतिक सन्तुलन बना रहे, वातावरण शुद्ध हो। सरकार द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाए तो जाते हैं मगर कुछ ही दिनों बाद ऐसे कार्यक्रमों में लगाये गये वृक्ष उपेक्षा के कारण सूखने लगते हैं और फिर अनदेखी की भेंट चढ़ जाते हैं। ऐसे वृक्षारोपण कार्यक्रमों का कोई लाभ नहीं है, लगाये गये पौधों का संरक्षण भी होना चाहिए।

दिल्ली जैसे महानगरों का तापमान और वातावरण पेड़-पौधों के अभाव के कारण ही प्रदूषित है। पेड़-पौधों की कमी के कारण ही ऐसे बड़े शहरों का तापमान गाँवों, देहात की अपेक्षा हमेशा ज्यादा पाया जाता है और वहाँ प्रदूषण भी अधिक होता है। इसका कारण यह है कि गाँव, देहात में एक तो पेड़-पौधे अधिक पाये जाते हैं, दूसरा वहाँ पर वाहन बहुत कम होते है जिससे वायु प्रदूषण की संभावना बहुत कम होती है। प्रदूषण के कारण आज शहरों में नई-नई बीमारियाँ आ गई है, बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी को प्रदूषण से होने वाली अनेक बीमारियों ने अपनी गिरफ्त में ले रखा है।

पेड़ हमारे लिए प्रकृति का वरदान हैं, हमें इनकी उपयोगिता और महत्त्व समझना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति जीवन में एक पेड़ अवश्य लगाये जिससे प्राकृतिक सन्तुलन बना रहे। यदि प्रत्येक व्यक्ति जीवन में एक पेड़ लगाने का संकल्प ले और जीवन पर्यन्त उसका संरक्षण करे तो प्रति वर्ष लाखों की संख्या में पेड़ लगाये जा सकते हैं और वातावरण हरा-भरा तथा पूर्णरूप से शुद्ध हो सकता है। सड़कों के दोनों ओर हरियाली ही हरियाली दिखाई देगी। गांव, शहर, महानगर जहाँ भी खाली स्थान हो, वहाँ पेड़ लगायें और वातावरण को शुद्ध करने में अपना सहयोग दें।

पेड़ लगाना और उसका संरक्षण करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है। यह किसी एक व्यक्ति या संस्था या सरकार द्वारा किया जाने वाला कार्य नहीं है, इसमें सभी का पूरा सहयोग होना चाहिए। यह ऐसा कार्य है जिसकी जिम्मेवारी सभी को लेनी होगी, ऐसा नहीं है कि हम सोचें यह हमारा कार्य नहीं है, हम क्यों पेड़ लगायें? वातावरण को शुद्ध व स्वच्छ रखने का काम तो प्रशासन व सरकार का है, यह सोच गलत है। वातावरण को शुद्ध रखना, अपने आसपास साफ-सफाई रखना, पेड़ लगाना और उसका संरक्षण करना यह सरकार या प्रशासन की जिम्मेवारी नहीं बल्कि हम सभी की जिम्मेवारी है और हमें इसे पूरी निष्ठा और ईमानदारी से निभाना चाहिए। अंत में मैं बस इतना ही कहूँगा '**पेड़-पौधे प्रकृति का वरदान हैं, इनका संरक्षण करें।**'

- कुलवंत सिंह सैनी

ज्ञान, भक्ति और कर्म के मिलने से आत्मा परमात्मपद प्राप्त करता है।

समाजसेवा को समर्पित एक राज्यपाल 'आचार्य देवव्रत'

प्रिय पाठकों ! गत दिनों हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल श्रीयुत् आचार्य देवव्रत जी से मिलने के लिए शिमला के राजभवन में पहुँचा। यह राजभवन लगभग 175 वर्ष पूर्व तत्कालीन अंग्रेजी सरकार ने अपने आवास के लिए बनाया था। इसमें दर्जनों कमरे हैं जो अत्याधुनिक सभी सुविधाओं से युक्त हैं। इसमें 100 के लगभग सरकारी अधिकारी एवं कर्मचारी हैं, जो राजभवन में आने वाले अतिथियों राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल तथा विभिन्न विभागों के मंत्रियों, बड़े अधिकारियों के आवास, भोजन आदि सभी प्रकार की सुविधाओं का पूरा-पूरा प्रबन्ध करते हैं।

जैसा कि मैं पढ़ता व सुनता आया था कि राष्ट्रपति की तरह राज्यपाल भी एक सफेद हाथी की तरह या रबर स्टैम्प की तरह एक फालतू (अनावश्यक एम. एल. ए. मंत्रियों की) पदवी है जो मात्र हस्ताक्षर करने, प्रतिज्ञा दिलवाने, सभाओं में उपस्थित होने तक का ही काम करते हैं। अपनी ओर से राजकार्यों में कोई प्रत्यक्ष हस्तक्षेप नहीं कर सकता, न ही कोई योजना / कानून विशेष बना सकता है। निष्क्रिय, अकर्मण्य व्यक्ति होता है जिस पर करोड़ों रुपये व्यय होते हैं किन्तु दो दिनों में कुछ घण्टों की चर्चा, विचार-विमर्श, प्रश्नोत्तर आदि के माध्यम से जो-जो बातें सामने आयीं उन्हें सुनकर मैं तो स्तब्ध/आश्चर्य चकित रह गया। उनकी कुछ बातों को जनसामान्य के लिए प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिन्हें पढ़-सुनकर वे हर्षित होंगे, उत्साह व प्रेरणा मिलेगी।

आचार्य देवव्रत जी ने राजभवन में आते ही राज्य के समस्त उच्चाधिकारियों से परिचय प्राप्त करने, उनके कार्य विभाग, उनके दायित्व, अधिकार, समस्याएँ व प्रश्नोत्तर आदि से सम्बंधित एक बैठक का आयोजन किया। इस बैठक में आचार्य जी को सहसा ही अधिकारियों की योग्यता, मानसिकता, भावनाओं से सम्बंधित जानकारी मिल गयी। जैसा कि राजनीति में होता है, विरोधियों व विपक्षियों ने इस बैठक की प्रतिक्रिया पर कपोल-कल्पित, मनगढ़न्त,

राजभवन में बनाई गई यज्ञशाला

मिथ्या धारणाएं बनाकर समाचार पत्रों में प्रकाशित करवा दी। किन्तु बैठक में विद्यमान बुद्धिजनों, निष्पक्ष अधिकारियों तथा समाज के सज्जनों ने इन विरोधियों के विरोध में आवाज उठाई तथा आचार्य जी की सराहना की और धन्यवाद भी प्रकट किया।

आचार्य ज्ञानेश्वरार्य

राजभवन में आते ही एक महत्त्वपूर्ण कार्य यह किया कि अंग्रेजों के काल से चली आ रही शराब, मांस की पार्टी वाले 'मयखाना' को उखाड़कर वहाँ पर एक सुन्दर, आकर्षक यज्ञशाला का निर्माण कराया। इस यज्ञशाला के उद्घाटन में भूतपूर्व तथा वर्तमान मुख्यमंत्रियों, विधानसभा के सदस्यों, मंत्रियों तथा राज्य के अन्य गणमान्य व्यक्तियों को आमंत्रित किया और उन्हें यजमान बनाया। वेदमंत्रों के शुद्ध पाठ द्वारा यज्ञ कराया तथा भजनोपदेशकों से भजन भी कराए। इसका राज्य की जनता पर इतना अद्भुत प्रभाव पड़ा कि आचार्य जी उनके लिए श्रद्धास्पद बन गये।

विरोधियों, स्वार्थियों, अज्ञानियों ने इसका भी विरोध किया कि राजभवन में यज्ञशाला बनना अनुचित है, यह धर्मनिरपेक्षता के विरुद्ध है तो उनको उत्तर दिया गया कि जब राष्ट्रपति भवन में मस्जिद, गुरुद्वारा बन सकता है तो राजभवन में यज्ञशाला क्यों नहीं बन सकती ? इस तर्क से भी विरोधी निरुत्तर हो गये।

आचार्य जी ने जब से राज्यपाल का पद संभाला है, अपने पूरे स्टाफ को वे व्यस्त रखते हैं। प्रत्येक दिन कहीं न कहीं उनका कार्यक्रम होता है मगर फिर भी जब भी खाली समय मिलता है वे गाड़ी में फावड़ा, तसला, झाड़ू, बाल्टियाँ लेकर निकटस्थ गांवों में कर्मचारियों के साथ निकल जाते हैं और सफाई अभियान शुरु कर देते हैं। गांव, नगर की जनता और वहाँ के राज्य कर्मचारी भी आकर राज्यपाल जी के साथ सफाई कार्य में लग जाते हैं। इसका भी जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। यहाँ सर्वत्र उनकी स्तुति प्रशंसा होने लगी और आदर भाव भी होने लगा।

गुरुकुलीय शिक्षा से निर्मित, वैदिक विद्वान् निष्क्रिय, अकर्मण्य रहने वाले नहीं होते हैं वे कुछ न कुछ समाज, गांव, नगर, राज्य के लिए कार्य करते ही रहते हैं। आचार्य जी ने गांवों का भ्रमण प्रारम्भ किया। गांव वालों से समस्याएं सुनी, स्वयं भी अनुभव किया। अनुभव किया कि पर्याप्त वर्षा वाला प्रदेश होते हुए भी पानी सारा नीचे

... शेष पृष्ठ 9 पर

गृहस्थ धर्म

*ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास इन चारों आश्रमों का अपने-अपने स्थान पर विशेष महत्त्व है। इनमें से कोई भी उपेक्षणीय या ग्रहणीय नहीं है। इसमें ध्यान देने वाली बात यह है कि अर्थ और काम के सेवन का सम्बन्ध अन्य तीनों आश्रमों में न होकर केवल गृहस्थाश्रम के साथ हैं वय, तप, त्याग और अहर्निश परोपकार-परायण जीवन बिताने के कारण संन्यास का दर्जा बेशक सबसे ऊँचा है किन्तु ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास ये तीनों आश्रम जिस एक आश्रम की बदौलत चल पाते हैं, वह केवल गृहस्थ आश्रम है। '**गुरुकुल-दर्शन**' के पाठकों हेतु आचार्य रामदेव जी द्वारा लिखित '**गृहस्थ धर्म**' में वर्णित ज्ञान को पहुँचाने के लिए इस शृंखला को आरम्भ कर रहा है जिससे पाठक गृहस्थ धर्म से जुड़े अपने कर्त्तव्यों और जिम्मेदारियों के बारे में जान सकें।*

लेखक परिचय : आचार्य रामदेव जी का जन्म 31 जुलाई 1881 को ग्राम बजवाड़ा (महात्मा हंसराज जी का गांव), होशियारपुर में हुआ था। इन्होंने व्यक्तिगत रूप से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अंग्रेजी मुखपत्र 'आर्य पत्रिका' का सम्पादन किया। आचार्य जी हिन्दी और अंग्रेजी के प्रौढ़ लेखक, वक्ता और विद्वान् थे। उनकी टक्कर का व्याख्याता और विद्वान् विरला ही पैदा होता है। आपने जालंधर छावनी स्थित विक्टर हाईस्कूल में हैड मास्टर के पद को सुशोभित किया, साथ ही जींद में विद्यालय निरीक्षक के रूप में भी कार्य किया। महात्मा मुंशीराम जी के अनुरोध पर आप गुरुकुल कांगडी को जीवन दान करके गुरुकुल के हो गये और 1936 में आप स्वर्ग सिधारे। 'गृहस्थ-धर्म' में आपने गृह्यसूत्रों के आधार पर गृहस्थ धर्म का जैसा सांगोपांग विवेचन किया है, वह न केवल पठनीय है, बल्कि सही दिशा दिखाने वाला है। वैदिक धर्म ने गृहस्थ धर्म के पालन के लिए जैसा निर्देश दिया है, उसके अनुसार यदि समस्त मानव जाति आचरण करने लग जाए तो निस्सन्देह वह आज की अपेक्षा कहीं अधिक सुखी होगी।

गृहस्थ धर्म : वानप्रस्थ

सूत्रग्रन्थों में वानप्रस्थियों के कर्त्तव्य निम्नलिखित बताए गये हैं:- जटा जूट, वल्कल वा चर्म पहने, ग्राम में न जाय और न जाते हुए खेत में पग रखे, केवल वन्य फल फूलों को एकत्रित कर खावे, सदा (अन्तर और बाह्य से) पवित्र रहे, अपने हृदय को दया भाव से पूर्ण रखे जो अतिथि उसके आश्रम पर आवे उनका फल मूल से सत्कार करे, अन्यों को दिया तो करे परन्तु किसे से कुछ ले नहीं।

त्रिकाल : प्रात:, मध्यान्ह और सन्ध्या को स्नान करे। अपने आश्रम के नियमानुसार अग्न्याधान कर अग्निहोत्र करे। इस प्रकार छह मासों तक निर्वाह कर कुटि और अग्नि को भी परित्याग कर वृक्ष मूल में निवास करे, इस प्रकार जो कोई देव, पितर और मनुष्यों को उन-उन का भाग देता है, उसे अनन्त सुख मिलता है।

(वासिष्ठ, अध्याय 9 के सब सूत्र)

(फलादि पर जीवन निर्वाह करने के पश्चात् कुछ दिनों तक) केवल जल पीकर और पुन: केवल हवा पीकर और पुन: कुछ दिन (श्वास लेता हुआ) सर्वथा निराहार रहे (अर्थात इस प्रकार उग्र तितिक्षा का साधन करे)।

(आपस्तम्ब सूत्र, प्रश्न 2, पटल 9, खण्ड 22 सूत्र 4)

वानप्रस्थियों के विषय में मुण्डकोपनिषत् में लिखा है-

तप: श्रद्धे येह्यु पवसन्त्येरण्ये शान्ता विद्वांसो भैक्षचर्या चरन्त:।
सूर्यद्वारेण ते विरजा: प्रयान्ति यत्राऽमृत: स पुरुषो ह्यव्ययात्मा।।

अर्थात् जो शान्त विद्वान् लोग वन में तप धर्मानुष्ठान और सत्य की श्रद्धा करके भिक्षाटन करते हुए जंगल में बसते हैं वे जहाँ नाश रहित पूर्ण पुरुष हानि लाभ रहित परमात्मा है वहाँ निर्मल होकर प्राण द्वार से उस परमात्मा को प्राप्त होकर आनन्दित हो जाते हैं।

सन्यास

सूत्रग्रन्थों में संन्यासियों के कर्त्तव्य निम्नलिखित बताये गये हैं- संन्यासी को चाहिए कि सब प्राणियों को अभय दान देता हुआ घर से निकल जावे, वह संन्यासी जो सब प्राणियों के साथ निर्वैर (शान्ति सहित) वर्तता हुआ घूमता है उसे किसी भी प्राणी से भय प्राप्त नहीं होता, संन्यासी को चाहिए कि वह अन्यान्य सभी संस्कारों को परित्याग दे परन्तु वेदों के अध्ययन को कभी न छोड़े क्योंकि वेदों के भूलने से वह शूद्र हो जाता है, अत: वेदों का अध्ययन कभी न छोड़े, (उसके लिए) 'ओ३म्' का स्वाध्याय वेद का सर्वोत्तम स्वाध्याय है, प्राणायाम सबसे बढ़कर तपश्चरण है, भिक्षा पर निर्वाह उपवास व्रत से बढ़कर है, दयालुता दानशीलता से बढ़कर है, संन्यासी को चाहिए कि वह अपने बाल मुंडवाया करे, किसी प्रकार की भी सम्पत्ति धारण न करे और न ही कोई अपना गृह रखे, प्रतिदिन ऐसे सात द्वारों में (भोजनार्थ) भिक्षा मांगे जिन्हें उसने पूर्व से न चुन रखा हो, भिक्षा

मौन में अन्तर्शक्ति को जगाने की अधिक क्षमता होती है।

मांगने ऐसे समय पर जावे जब कि भोजनशाला का धूम बन्द हो गया हो और चक्की तथा ओखली का चलना भी बन्द हो, कौपीन धारण करे अथवा एक वस्त्र पहने, भूमि पर शयन करे, अपने निवास स्थानों को बारम्बार बदलता रहे, ग्राम के किसी अन्तिम भाग, किसी देव मंदिर में, अथवा किसी रिक्त गृह में अथवा किसी वृक्ष के मूल में निवास करे, अपने हृदय में विश्वव्यापक ब्रह्म का ज्ञान खोजा करे, जब उसे (भोजनादि के लिए) कुछ प्राप्त न हो तो उसे उदासीन होना ठीक नहीं और न उसे प्रसन्न होना चाहिए जब उसे कुछ मिल जावे। उसे केवल उतना ग्रहण करने का यत्न करना चाहिए जितने से उसका प्राण पोषण हो, गृह सम्बंधी सम्पत्तियों के विषय में उसे किंचित भी चिन्ता नहीं करनी चाहिए। उस संन्यासी को ही मोक्ष का ज्ञान होता है जो न तो किसी कुटि, न वस्त्र, न तीन पुष्करों (पवित्र ताल), न गृह, न आसन और न भोजन की चिन्ता करता है। संन्यासी को किसी प्रकार के भी विषयानन्द को भोगना नहीं चाहिए।

(वाशिष्ठ सूत्र, अध्याय 10 के कई सूत्र)

संन्यासी को चाहिए कि पीत युक्त लाल रंग के वस्त्र धारण करे। मन, वचन और कर्म तीनों में से किसी से भी किसी प्राणी को हानि न पहुँचाए (दण्ड न दें)।

(बौधायन सूत्र प्रश्न 2, अ06, कंडिका 11, सूत्र 21 और 23)

ब्रह्म का अनादि महत्त्व उसी क्रियाओं से न बढ़ता है और न घटता है, जीवात्मा उस महत्त्व के भाव को जान सकता है, वह पुरुष जो उस भाव को जानता है, दुष्कर्मों के लांछन से बचा रहता है, उस ज्ञान से (बारम्बार के) जन्मों से बच जाता है, उस पुरुष को (जो संन्यासी होता है) अनादि (परमात्मा) महत्त्व को पहुंचा देता है। (संन्यासाश्रम की महिमा इन वाक्यों से निकलती है) संन्यासी को श्वेत वस्त्र धारण नहीं करना चाहिए।

(बौधायन प्रश्न 2, अध्याय 10, कंडिका 17, सूत्र 7, 9, 44)

संन्यासी को चाहिए कि इन व्रतों को अवश्य धारण करें अर्थात् प्राणी मात्र को हानि पहुंचाने की इच्छा से रहित रहना, सत्यता, दूसरों की सम्पत्ति की कामना से सदा पृथक् रहना, पवित्रता और उदारता। उसे भिक्षा के लिए केवल इतनी देर ठहरना चाहिए जितनी देर में एक गाय दूही जा सके। संन्यासी को चाहिए कि अग्नि न रखे, कोई भी निवास स्थान न बनावे, कोई भी अपना रक्षक न रखे। वेद रूपीवृक्ष का मूल '**ओ३म्**' है (अत:) '**ओ३म्**' वेद का सार है। ओ३म् के अर्थों के विचार से (ध्यान से) संन्यासी ब्रह्म में युक्त हो जाने योग्य बन जाता है। **(बौधायन सूत्र, प्रश्न 2, अध्याय 10, कंडिका 18, सूत्र 1, 2, 6, 22, 25 व 26)**

संन्यासी को चाहिए कि (अपने लिए धन न रखे, (सदा) पवित्र रहे, उत्तम भोजनों की इच्छा छोड़ दे, अपनी वाणी, आँख तथा वचन को वश में रखे। **(गौतम अध्याय 3, सूत्र 11, 12, 16)**

मौन के द्वारा इंन्द्रियों पर नियंत्रण हो जाता है।

ब्राह्मणग्रन्थों तथा उपनिषदों में संन्यासियों के विषय में लिखा है :-
पुत्रैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च लोकैषणायाश्च व्युथाय भिक्षाचर्य चरन्ति। **(शतपथ काण्ड 14, प्र0 5, ब्रा0 2, कं0 1)**

पुत्रादि के मोह, धन के भोग व मान्य, लोक में प्रतिष्ठा व लाभ से अलग होके संन्यासी लोग भिक्षुक होकर रात दिन मोक्ष के साधनां में तत्पर रहते हैं।

वेदान्त विज्ञानसुनिश्चितार्थाः संन्यासयोगाद्यतयः शुद्धसत्वाः ।
ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले परामृताः परिमुच्यन्ति सर्वे।।

(मुण्डकोपनिषत्)

जो वेदान्त अर्थात् परमेश्वर प्रतिपादक वेदमंत्रों के अर्थ, ज्ञान और आचार में अच्छे प्रकार निश्चित संन्यास योग से शुद्धअन्तःकरण संन्यासी होते हैं वे परमेश्वर में मुक्ति सुख को प्राप्त हो भोग के पश्चात जब मुक्ति में सुख की अवधि पूर्ण हो जाती है तब वहाँ से छूटकर संसार में आते हैं।

नाविरतो दुश्चरितान् नाशान्तो नासमाहितः।
नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात्।।

(कठोपनिषत्)

जो दुराचार से पृथक् नहीं, जिसको शान्ति नहीं, जिसका आत्मा योगी नहीं और जिसका मन शान्त नहीं वह (संन्यास लेके भी) प्रज्ञान से परमात्मा को प्राप्त नहीं होता।

यच्छेद्वाङ्. मनसी प्राज्ञस्तद्यच्छेद् ज्ञान आत्मनि।
ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेत्तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि।।

(कठोपनिषत्)

(संन्यासी) बुद्धिमान वाणी और मन को अधर्म से रोक के उनको ज्ञान और आत्मा में लगावे और उस ज्ञानस्वात्मा को परमात्मा में लगावे और उस विज्ञान को शान्तस्वरूप आत्मा में स्थिर करे।

सर्व आश्रमियों के सामान्य धर्म

ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यासी इन चार आश्रमियों के सामान्य धर्म ये हैं -
पवित्र ज्ञान (वेद) का परित्याग न करना (अर्थात् वेदों का स्वाध्याय) सब आश्रमियों का सामान्य धर्म है।

(आपस्तम्ब, प्रश्न 2, पटल 9, खण्ड 21, सूत्र 4)

पीछे किसी की निन्दा, ईर्ष्या, अभिमान, नास्तिकता, स्तेय, स्वप्रशंसा, अन्यों पर दोषारोपण, छल, कपट, लोभ, भ्रम, क्रोध, द्वेष इन सब का त्याग सभी आश्रम के लोगों का कर्त्तव्य माना जाता है।

(वाशिष्ठ अध्याय 10, सूत्र 30) ...**क्रमशः**

ऋषि ने निर्भीकता से वेद का प्रचार किया

मनमोहन आर्य

ऋषि दयानन्द सत्य की खोज करने अपने पिता के घर से निकले थे और उन्होंने देश देशान्तर का भ्रमण करके अनेक विद्वानों, योगियों, ज्ञानियों की सगंति सहित देश के अधिकांश स्थानों भर उपलब्ध वेद एवं सभी प्रकार के धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन व उनका मनन किया था। सद्ज्ञान व सच्चे योग को प्राप्त करने के लिए उन्होंने देश के अनेक स्थानों पर जाकर वहां के समाज व व्यक्तियों के सम्पर्क से उन्हें सामाजिक स्थिति का ज्ञान भी हुआ था। देश और समाज मुख्यत: हिन्दुओं के पतन के कारणों पर विचार करने का अवसर भी उन्हें मिला था। योग व ध्यानोपासना में वह दक्ष हो चुके थे और विद्या प्राप्ति की उनकी इच्छा अभी शेष थी जो सन् 1860 से सन् 1863 के मध्य लगभग तीन वर्ष मथुरा के स्वामी विरजानन्द सरस्वती के सान्निध्य में अध्ययन करने पर पूरी हुई थी। विद्या पूर्ण कर लेने के बाद उनके सामने अपने भविष्य के कार्यो के निर्धारिण का अवसर था। वह अद्वितीय ब्रह्मचारी और संन्यासी तो पहली से ही थे, इस कारण अब वह किसी सांसारिक कार्य में तो प्रवृत्त हो ही नहीं सकते थे। ऐसी स्थिति में हमें उनके जीवन में जो विकल्प दृष्टिगोचर होता है वह यह कि वह एक आश्रम खोलते और और वहां योग व ध्यान सहित अपने गुरु के समान संस्कृत के आर्ष व्याकरण सहित कुछ वेद और वेदानुकूल प्रामाणिक ग्रन्थों का अध्ययन कराते। ऐसा यदि करते तो देश की स्थिति में कोई मौलिक व विस्तृत परिवर्तन, बदलाव व समाज सुधार आदि का लाभ न होता। पूरा देश अविद्या, अज्ञान, कुरीतियों, अनैतिक परम्पराओं, मिथ्या विश्वासों, परस्पर अन्याय व शोषण सहित अनेकानेक सामाजिक व्याधियों से ग्रस्त था।

देश और समाज की यह स्थिति स्वामी दयानन्द जी को भी ज्ञात थी और उनके गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी को भी प्रत्यक्ष थी। सन् 1863 में गुरु दक्षिणा के अवसर पर स्वामी जी अपने गुरुजी की प्रिय वस्तु लौंग की व्यवस्था करके उनके समीप उपस्थित हुए और उन्हें लौंग भेंट कर उनसे वहां से जाने की आज्ञा मांगी। ऐसा प्रतीत होता है कि स्वामी विरजानन्द जी ने इस विदाई व दीक्षा की घड़ी को विचार कर गहन मंथन किया था। स्वामी जी के विदा मांगने पर उनकी वाणी ने स्वामी दयानन्द के सामने देश के पतन और उसके प्रमुख कारण अविद्या की चर्चा की। लगता है कि उन्होंने कहा होगा कि सृष्टि के आरम्भ से महाभारतकाल व उससे कुछ पूर्व वर्षो तक आर्यो का सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य पूरे विश्व पर रहा और अब उन्हीं की सन्तानें ईसाई, मुसलमानों सहित अविद्याग्रस्त पण्डे पुजारियों की गुलाम बनी हुई हैं और ये सभी लोग उन ऋषि पुत्र-पुत्रियों का उनकी अज्ञानता के कारण शोषण और दोहन कर रहे हैं। इन बुराइयों से निवृत्ति का एक ही उपाय है और वह है वेदों का प्रचार कर अविद्या का नाश करना। उन्होंने कहा होगा कि दयानन्द ! तुम इस कार्य को करने के लिए सर्वथा उपयुक्त, सक्षम व समर्थ हो। मैं तो अपने जीवन में चाह कर भी प्रज्ञाचक्षु होने के कारण इस कार्य को कर नहीं सका। मैं चाहता हूं कि तुम यह कार्य को मनसा-वाचा-कर्मणा करो। यही कार्य तुम्हें यशस्वी व महान् बनायेगा। यह तुम्हारा कर्तव्य भी है और दायित्व भी। इसकी उपेक्षा देश व समाज सहित तुम्हारे अपने लिए भी अहितकर व हानिप्रद हो सकती है। इस कार्य के लिए मेरा आशीर्वाद और शुभकामनायें तुम्हारे साथ हैं। ऋषि दयानन्द का यह गुण आरम्भ से ही दिखाई देता है कि वह किसी भी विषय व समस्या के निवारण के लिए तत्क्षण निर्णय ले लेते थे। गुरु ने कहा और स्वामी जी ने विचार करने में किंचित विलम्ब नहीं किया। गुरुजी से आद्र स्वर में बोले गुरु जी मैं आपके परामर्श और आज्ञानुसार ही अपना शेष जीवन वेद और ज्ञान के प्रचार प्रसार में लगाऊंगा और देश व समाज को अविद्या से मुक्त करने के लिए प्राणों का मोह त्याग कर भी हर सम्भव प्रयत्न करूंगा। गुरु जी यह उत्तर सुनकर गदगद हुए होंगे। स्वाभाविक है कि उनकी आंखों से अश्रुधारा भी प्रवाहित हुई होगी। इतिहास में ऐसा दूसरा उदाहरण नहीं है। यदि होता तो यह देश गुलाम कभी न हुआ होता। स्वामी विरजानन्द जी विवेकशील होने पर भी ऐसी अद्‌भुत परिस्थिति में शिष्य की भीष्म प्रतिज्ञा को सुनकर भाव विह्वल हुए होंगे ओर अपनी आत्मा से स्वामी दयानन्द जी को कोटिश: आशीर्वाद दिये होंगे।

स्वामी जी ने अपने गुरु को दिए वचनों को ध्यान में रखकर अविद्या के नाश और विद्या की वृद्धि करने की योजना तैयार की। इसी के परिणाम स्वरूप उन्होंने वेद प्राप्त किये। उनका गहनता व गम्भीरता से पारायण किया। उन्होंने पाया कि वेद का एक-एक शब्द ईश्वरीय ज्ञान के अनुरूप एवं प्रामाणिक है। परवर्ती मनुष्य निर्मित साहित्य में वेदों के विचारों व भावनाओं जैसी उच्चता नहीं है। उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों और मान्यताओं के आधार पर जब पुराण, कुरान, इंजील, बौद्ध व जैन मतों के ग्रन्थों का अवलोकन व अध्ययन किया तो वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि इन सभी ग्रन्थों में सत्यासत्य विद्यमान है। धार्मिक साहित्य में असत्य विष के समान हानिकर होता है। उन्होंने वेदों की सत्य व अकाट्य मान्यताओं को देशवासियों व समाज के सम्मुख अपने व्याख्यानों, लेख व ग्रन्थों सहित प्रस्तुत किया और इतर मत के विद्वान लोगों को वार्तालाप व शंका समाधान हेतु आमंत्रित किया। अविद्याग्रस्त मतों की मिथ्या व अवैदिक असत्य मान्यताओं का खण्डन भी उनके अज्ञान के उन्मूलन व मानव जाति की उन्नति व सुख के लिए किया। समाज के निष्पक्ष और बुद्धिमान लोग उनके विचारों से

कभी-कभी कितने ही अनर्थों को रोकने का अमोघ उपाय मौन हो जाता है।

प्रभावित होने लगे। उनकी संख्या बढ़ने लगी। वह देश भर में जा जाकर प्रचार करने लगे ओर जिससे वेदानुयायियों की संख्या में वृद्धि का क्रम जारी रहा। इसी बीच स्वामी जी ने काशी में 16 नवम्बर, सन् 1869 को मूर्तिपूजा की अवैदिकता पर काशी के 30 से अधिक शीर्ष पण्डितों से शास्त्रार्थ किया जिससे महाभारतकाल के बाद पहली बार लोगों को ज्ञात हुआ कि मूर्तिपूजा का विधान वेदों में नहीं है। वेद की विचारधारा सभी प्रकार की मूर्ति अर्थात् जड़ पूजा के विरुद्ध है। स्वामी जी ने वैदिक विचारधारा को जन जन तक पहुंचाने के लिए सत्यार्थप्रकाश, पंचमहायज्ञविधि, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, गोकरुणानिधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्यरत्नमाला सहित वेदभाष्य का कार्य भी किया जिसे बुद्धिमान धार्मिक निष्पक्ष लोगों ने अपनाया व उनके अनुयायी बन गये।

स्वामी दयानन्द जी ने अपने अनुयायियों के अनुरोध पर 10 अप्रैल, सन् 1875 को मुम्बई नगर में वेदों के स्थाई प्रचार व प्रसार हेतु आर्यसमाज की स्थापना की जिसका मुख्य उद्देश्य वेद प्रचार और अविद्या का नाश सहित विद्या की वृद्धि करना व सर्वत्र सत्य को प्रतिष्ठित करना था। स्वामी दयानन्द जी ने वह सभी कुछ किया जिससे की संसार से धर्म व समाज के क्षेत्र में विद्यमान अविद्या व कुपरम्परायें समाप्त हो जायें। एक व्यक्ति जितना कार्य कर सकता है उन्होंने किया और उसके शुभ परिणाम भी हमारे सामने हैं। आज कोई मत अपनी धर्म पुस्तक व परम्पराओं की वैसी शेखी नहीं बघार सकता जैसी की वह स्वामी दयानन्द जी के समय में बघारा करते थे। ज्ञान, तर्क व युक्ति तथा सृष्टिक्रम की दृष्टि से वेद और आर्यसमाज की मान्यतायें सत्य एवं अखण्डनीय हैं। वैदिक धर्म वह धर्म है जो धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को अपना लक्ष्य व प्राप्त योग्य बताता है। यह वस्तुत: वैदिक धर्म के पालन से ही प्राप्त भी होता है। इनकी प्राप्ति की विस्तृत योजना व कार्य विधि ऋषि दयानन्द ने अपने अनेक ग्रन्थों में दी है जिसमें पंचमहायज्ञविधि एवं संस्कारविधि ग्रन्थ मुख्य हैं। ऋषि दयानन्द ने वैदिक धर्म के जिन सिद्धान्तों एवं मान्यताओं का प्रचार किया उसके सम्मुख अन्य सभी मत व पंथ बौने सिद्ध होते हैं। वह सत्य की कसौटी पर सत्य सिद्ध नहीं होते। यही कारण है कि किसी मत, पंथ व सम्प्रदाय में आर्यसमाज की किसी मान्यता व सिद्धान्त पर आक्षेप करने की शक्ति व साहस नहीं होता। अतीत में किसी ने यदि आक्षेप किया भी तो आर्यविद्वानों ने उसका समुचित उत्तर व समाधान किया है। वैदिक धर्म वा आर्यसमाज के सिद्धान्त अकाट्य, सर्वजनहितकारी एवं उपादेय हैं। वैदिक धर्म ही एकमात्र ईश्वरीय, शाश्वत व सनातन तथा सत्य सिद्धान्तों पर आधारित प्रामाणिक धर्म व मत है, इतर कोई नहीं है। वैदिक धर्म संसार के मनुष्यों का आदि, वर्तमान और सृष्टि के प्रलय काल से पूर्व तक का असत्य से सर्वथा रहित पूर्ण सत्य व वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुरूप धर्म है जिसका सभी मनुष्यों को अपने मत व आचार्यों के पूर्वाग्रहों को नजरंदाज कर ग्रहण व उसी का आचरण करना चाहिये।

ऋषि दयानन्द ने विद्या अर्जित कर संसार से अज्ञान व अविद्या को मिटाने का सफल प्रयास किया। उन्हें यह ज्ञात ही था कि वह शत प्रतिशत सफल भले ही न हो, उसका आंशिक प्रभाव तो देश व समाज पर पड़ेगा ही। वह यह भी जानते थे कि ईश्वर भी वेद प्रचार का जन जन में प्रचार चाहता है और उनके लिए ऐसा करना ईश्वर की आज्ञा का पालन करना है। स्वामी दयानन्द जी यह भी जानते थे कि वेद प्रचार का कार्य जोखिम भला कार्य है। इस कार्य में पद पद पर खतरा है। विरोधी व विपक्षी मत वाले उनकी जान के दुश्मन बन जायेंगे। उनका जीना हराम हो जायेगा। परन्तु देश व समाज के उपकार, मानव कल्याण तथा इन्हें आत्मा का धर्म मानने के कारण स्वामी जी ने सभी व किसी विपरीत प्रभाव पर ध्यान नहीं दिया और एकनिष्ठ होकर अपने कार्य पर लगे रहे। ईश्वर ने उन्हें सन् 1863 से 1883 तक 20 वर्षो का समय दिया। इन बीस वर्षो में उन्होंने जो कार्य किया वह अनेक आत्मायें सहस्रों जन्म लेकर भी नहीं कर सकती। इसी कारण हम उनके मानव उत्थान और सबकी सुख, समृद्धि तथा ईश्वर की प्राप्त कराने के कार्यो के प्रशंसक एवं अनुयायी हैं। हम उनके सिद्धान्तों को यथासम्भव अपनाते भी हैं व प्रयास करते हैं कि दूसरों को भी उससे परिचित एवं लाभान्वित करायें। उसी हेतु की पूर्ति के लिये यह लेखन का कार्य कर रहे हैं। ईश्वर सभी देशवासियों को सद्बुद्धि दे। सभी सत्य मत का ग्रहण व असत्य मतों का त्याग करें। सभी अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करें। सभी असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर और मृत्यु से अमृत अर्थात् मोक्ष की ओर अग्रसर हां, यही ऋषि दयानन्द जी को अभीष्ट था। वही सब आर्यो को भी अभीष्ट है। मनुष्यमात्र के कल्याण की भावना की कीमत स्वामी दयानन्द जी को अपने जीवन का बलिदान देकर चुकानी पड़ी। वह जिनके कल्याण के लिए काम कर रहे थे, उन मूर्ख लोगों ने ही उन्हें विष दे दिया। जोधपुर राज्य की ओर से भी उनकी चिकित्सा पर उचित ध्यान नहीं दिया गया। डॉ. अलमर्दान की चिकित्सा से भी रोग बढ़ा व स्वामी जी के स्वास्थ्य को हानि हुई। स्वामी जी का अनुयायी अचानक उनकी रुग्णावस्था के समय जोधपुर पहुंच गया और उसने समाचार पत्र में सूचना प्रकाशित करा दी। इस समाचार की पुष्टि में कुछ ऋषि भक्त अजमेर से जोधपुर पहुंचे तो स्वामीजी के रोग की तीव्रता व दयनीय अवस्था को देखा और देश भर के आर्यो को तार दे देकर सूचित किया। मृत्यु से कुछ दिन पूर्व उनकी उपयुक्त चिकित्सा की गई परन्तु रोग इतना बढ़ा दिया गया व बढ़ गया था कि वह स्वस्थ न हो सके। ईश्वर, वेद व सत्य के प्रचार व सत्य मनवाने का संसार का सबसे बड़ा आग्रही विरोधियों के वैमनस्य का ग्रास बन गया। देश व संसार भविष्य में उनके जीवन से होने वाले लाभों से सदा सदा के लिए वंचित हो गये। यह हमारा हतभाग्य ही था कि हम स्वामी दयानन्द जी के जीवन की रक्षा नहीं कर पाये। इत्योम् शम्।

- मनमोहन कुमार आर्य

196, चुक्खूवाला-2, देहरादून 20081, मो-9412985121

बोलना एक सुन्दर कला है और मौन उससे भी ऊंची कला है।

जानिए क्या है सत्यार्थ प्रकाश?

सत्यार्थ प्रकाश एक महान ग्रन्थ है। सत्यार्थ प्रकाश एक दार्शनिक ग्रन्थ है, ठीक-ठीक समझने के लिए अनेक ग्रंथो को अध्ययन की आवश्यकता है, सत्यार्थ प्रकाश ऐसा सरल ग्रन्थ है कि साधारण शिक्षित भी उससे लाभ उठा सकते हैं और उसका अनुसरण करके अपने जीवन-केंद्र को परिवर्तित कर सकते है।

स्वामी जी भूमिका मे लिखते हैं **''मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-असत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसे मिथ्या प्रतिपादन करना, सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान मे असत्य और असत्य के स्थान मे सत्य का प्रकाश किया जाय।''** अब आगे हम यह बताएँगे सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ मे स्वामी जी ने चौदह समुल्लासों में किन-किन विषयों पर प्रकाश डाला है।

प्रथम समुल्लास

पहला समुल्लास कुछ अजीब-सा मालूम होता है। इसमें संस्कृत व्याकरण का इतना भाग है की नये पढ़ने वाले को यह समुल्लास बड़ा शुष्क प्रतीत होता है, परन्तु पहले समुल्लास मे यह सब इसलिए दिया कि आगे का मार्ग साफ हो जावे। उस समय भी, जैसा आजकल है, सैकडों देवी-देवताओं की पूजा होती थी। ईश्वर विषय को इस समुल्लास मे स्वामी जी ने स्पष्ट किया है।

द्वितीय समुल्लास

दूसरे समुल्लास में स्वामी जी ने बालकों की शिक्षा पर बल दिया है। भारतीय समाज में जन्म से सम्बन्ध रखने वाली अनेक भ्रान्तियाँ है जिनका आधार अज्ञान है। इसमें सुधार की आवश्यकता है। स्वामीजी का विश्वास है की बच्चों की शिक्षा का आरम्भ उनके जन्म लेने से बहुत पहले आरम्भ हो जाता है इसलिए माता-पिता के स्वास्थ्य और आचार-विचार का बड़ा ध्यान रखना चाहिये।

तृतीय समुल्लास

इस समुल्लास में स्वामी जी ने पाठशाला में शिक्षा का क्या क्रम होना चाहिये इसका विस्तृत वर्णन किया है। ब्रह्मचर्य आश्रम मे जिन-जिन नियमों का पालन होना चाहिए, उसका वर्णन इस अध्याय मे किया गया है। हमारे जीवन का चौथाई भाग अर्थात 25 वर्ष शिक्षा में व्यतीत होने चाहिये। गृहस्थ आश्रम का प्रश्न 25 वर्ष से पूर्व नहीं उठना चाहिये।

चतुर्थ समुल्लास

इस समुल्लास में गृहस्थ आश्रम के सम्बन्ध में शिक्षा दी गयी है अर्थात् किस प्रकार विवाह करके स्त्री-पुरुष को परिवार के कार्यो को करना चाहिये। जिस प्रकार हमारे माता-पिता ने हमें जन्म दिया, हमारा पालन किया उसी प्रकार हमारे उपर यह ऋण है कि हम भी अपनी संतान का पालन करें। यह हमारा कर्त्तव्य है कि जब हमारी बारी आयी है तो हम अपने उत्तम अधिकारी छोड़कर जावें। समाज का यही नियम है।

पंचम समुल्लास

इस समुल्लास मे स्वामी जी ने वानप्रस्थ और संन्यास के कर्तव्यों का वर्णन किया है। पहले बताया कि मानवीय जीवन के 4 भाग हैं 1. ब्रह्मचर्य आश्रम 2. गृहस्थ आश्रम 3. वानप्रस्थ आश्रम 4. संन्यास आश्रम। साधारणत: यह विचार किया जाता है कि मनुष्य की आयु 100 वर्ष होती है।

षष्ठ समुल्लास

इस समुल्लास में स्वामी जी ने राजा और प्रजा के सम्बन्ध का वर्णन किया है। कोई समाज बिना राजा के नहीं रह सकता, परन्तु राजा कई प्रकार के होते हैं। कहीं-कहीं तो जिसकी तलवार में जोर है वही राजा बन जाता है और जब तक उसमें या उसके परिवार की तलवार में जोर रहता है, वही राजा रहता है। कहीं-कहीं प्रजा राजा का निर्वाचन करती है। इस समुल्लास मे स्वामीजी ने राज धर्म पर अपने विचार शास्त्रों के आधार पर व्यक्त किये जो पढ़ने योग्य है।

सप्तम समुल्लास

इस समुल्लास में स्वामी दयानन्द जी ने ईश्वर और उनके गुणों का वर्णन किया है। कोई धर्म ऐसा नहीं जिसका आधार ईश्वर न हो। जैन और बौद्ध ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते फिर भी वे पूजा धर्म में विश्वास रखते है। सारे धर्म ईश्वर को मानते हैं पर उसके गुणों में वे सर्वसम्मत नहीं, उसमें विभिन्नता पायी जाती है। गुण का सम्बन्ध गुणी से होता है। मनुष्य को गुणी से कुछ लेना नहीं, उसके गुणों से काम है। इसलिए ईश्वर पर विश्वास करते हुए यदि हमारे मस्तिष्क में उसके गुणों की एकता नहीं तो धार्मिक झगडे पैदा हो सकते है।

अष्टम समुल्लास

इस समुल्लास में सृष्टि उत्पत्ति, प्रलय आदि विषयों एवं ईश्वर को सृष्टि का रचयिता बताया गया है।

नवम समुल्लास

इस समुल्लास में स्वामीजी ने मुक्ति और मोक्ष का वर्णन किया है। मुक्ति क्या है? कैसे प्राप्त होती है?

भय से उत्पन्न मौन पशुता और संयत से उत्पन्न मौन साधुता है।

दशम समुल्लास

सत्यार्थ प्रकाश के दसवें समुल्लास मे स्वामीजी ने मनुष्य-जीवन की साधारण बातों पर विचार किया है, जैसे क्या खाना चाहिये ? क्या नहीं खाना चाहिये ? आपस में कैसा व्यवहार करना चाहिये ? दैनिक जीवन किस प्रकार का होना चाहिए ? आदि-आदि।

एकादश समुल्लास

इस समुल्लास मे स्वामीजी ने हिंदू धर्म मे सम्मिलित अन्धविश्वास और कुरीतियों की आलोचना की है। हिंदू धर्म क्या है यही एक पहेली है। सभी स्वयं को हिन्दू कहते हैं और अपने को हिन्दू धर्म का अनुयायी मानते हैं। गैर लोग भी समझते हैं, यह हिन्दू है और हिन्दू धर्म का अनुयायी है।

द्वादश समुल्लास

इस समुल्लास में स्वामी जी ने तीन और मतों की आलोचना की है जिन्होंने हिन्दू धर्म के समान भारत में जन्म लिया, परन्तु उनकी गणना हिंदू धर्म में नहीं है। इसलिए उनका वर्णन 11वें समुल्लास में नहीं आया। उनके अनुयायियो की संख्या भी बहुत कम है उनमें एक है चार्वाक। उनका सिद्धान्त है '**न ईश्वर का अस्तित्व है, न ईश्वर की आवश्यकता है। जब तत्त्व एक-दूसरे से मिलते हैं, तो जीवन आरम्भ हो जाता है।**'

त्रयोदश और चतुर्दश समुल्लास

इन दो समुल्लास 13 और 14 समुल्लास में स्वामी जी ने ईसाइयत और इस्लाम की आलोचना की है। कई सौ वर्ष से इन दोनों का संघर्ष वैदिक धर्म से चलता रहा। यद्यपि ये दोनों भारतवर्ष में प्रभुता प्राप्त नहीं कर सके, तो भी इनका प्रभाव बढ़ रहा है। भारत के राजनैतिक और सांस्कृतिक बातों में भी इस्लाम और ईसाइयत का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

इत्यादि इन सारे विषयों पर सत्यार्थ प्रकाश रूपी सूर्य ने प्रकाश डाला है। इच्छुक, स्वाध्यायी और अस्वाध्यायी मनुष्य भी अपने ज्ञान की वृद्धि, संस्कार, संस्कृति, को जानने और इनको बचाने हेतु पूर्वाग्रह से दूर होकर इस कालजयी ग्रन्थ का समूह के माध्यम से अवश्य स्वाध्याय करे। अपने जीवन को उन्नत बनाने में इसका पूर्ण सहयोग लें और यही इस ग्रन्थ का मुख्य प्रतिपादित विषय भी है।

समाजसेवा को समर्पित...पृष्ठ 3 का शेष

मैदानों में बह जाता है, गांव में खेती के लिए पानी नहीं बचता, न पीने के लिए। अत: आपने गांव वालों को सुझाव दिया कि जहाँ पर गांव के आसपास नीची भूमि है, वहाँ पर पानी एकत्रित करने के लिए चक डेम बनाये जाएं जिससे सिंचाई के लिए पानी मिलेगा, पानी का स्तर ऊपर होगा और पीने के लिए भी पानी उपलब्ध होगा।

गांवों में भ्रमण करते हुए लोगों के घरों के आगे, पीछे, फैक्ट्रियों के खाली स्थानों, पर्वतों पर वृक्ष लगाने की भी प्रेरणा देते हैं। कम से कम एक वर्ष में एक व्यक्ति एक-एक वृक्ष लगाये तो अनायास ही लाखों, करोड़ों वृक्ष लग जाएंगे। गांव के लोगों को पुत्री उत्पन्न होने पर घर में गीत गाने, समारोह मनाने तथा गांव भर में मंडली बनाकर वाद्ययंत्रों के साथ गीत, भजन गाते हुए खुशी का प्रदर्शन करें जिससे बेटियों के प्रति श्रद्धा, प्रेम बढ़ेगा, ऐसा संदेश देते हैं। फैक्ट्री व दुकान मालिकों को अपने आसपास सफाई रखने, कूड़ा-कचरा हटाने, वहाँ पर कचरा पेटी रखने का भी संकेत करते हैं, उनको बताते हैं कि सफाई होने से सुन्दरता बढ़ेगी, रोग समाप्त होंगे तथा अन्यों को भी प्रेरणा मिलेगी।

राजभवन में यदा-कदा देशभर के राज्यों के पदाधिकारी, राज्यपाल, मुख्यमंत्री तथा राष्ट्रपति भी अतिथि के रूप में आकर निवास करते हैं और राजभवन में शराब, मांस, मछली आदि की मांग भोजन के रूप में करते है। मुझे सुखद आश्चर्य लगा कि सभी को यहाँ तक कि राष्ट्रपति जी को भी मांस, मछली परोसने हेतु स्पष्ट मना कर दिया, बाहर से मंगवाकर खाने की प्रार्थना को भी कठोर शब्दों में निषेध कर दिया कि ऐसा बिल्कुल नहीं होगा, "**मेरे लिए धर्म, संस्कृति की गरिमा बनाये रखना महत्त्वपूर्ण है, राज्यपाल का पद कोई महत्त्व नहीं रखता।**" यह एक साहस, निर्भीकता, आत्मबल का ही परिचायक है।

आचार्य देवव्रत जी

हिमाचल के राज्यपाल को देखकर देशभर के अन्य राज्यपालों के प्रति जो मेरी धारणा बनी हुई थी, वह समाप्त हो गई कि ये 'मिट्टी के माधो' होते हैं 'शो-पीस' होते हैं किन्तु आचार्य जी तो किसी अन्य मिट्टी के बने हैं, उनके मन, बुद्धि, विचारों का निर्माण करने वाले चाहे माता-पिता हों या आचार्यगण वे उच्च प्रकृति वाले आदर्श व्यक्ति थे। उनकी आत्मा ऋषियों के दिव्य सन्देशों, सिद्धान्तों, विधि-विधानों नियमों से रंगी हुई है। वे परिस्थितियों के दास बनकर, उनसे तुच्छ स्वार्थों के लिए समझौता करने वालों में से नहीं हैं। वे अज्ञानी, स्वार्थी, अभिमानी, अधर्मी, पापी व्यक्तियों के आगे झुकने वालों में से नहीं हैं। उनके लिए धर्म, सत्य, न्याय, आदर्श महत्त्वपूर्ण हैं धन, सत्ता, प्रतिष्ठा, सम्मान, तुच्छ है। ऐसे दिव्य गुणों, भावनाओं, संस्कारों, कर्मों से युक्त आचार्य जी पर हमें गर्व है। हम उनकी प्रगति और उन्नत भविष्य की कामना करते हैं जिससे राष्ट्र में वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार हो सके।

वेदों से उपजे मूल्य

जीवन-मूल्य वे तत्त्व, गुण, सिद्धान्त या नियम हैं जो किसी वस्तु, व्यक्ति या व्यवहार को उचित या उत्तम बताते हैं और जीवन के लक्ष्य एवं सोपानों का निर्धारण करते हैं। मूल्यों के आर्थिक, वैयक्तिक, सामाजिक, मानवीय, राष्ट्रीय, नैतिक, आध्यात्मिक आदि असंख्य भेद हो सकते हैं। चार वेद इन मूल्यों के प्रमुख स्रोत हैं।

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि।।

(ऋग्वेद : 5-51-15)

(हम सूर्य एवं चन्द्रमा के समान कल्याणमार्गी, निःस्वार्थ सेवी, तेजस्वी एवं आह्लादयुक्त हों तथा दानी, अहिंसक एवं ज्ञानी लोगों की संगति में रहें।)

यह मंत्र हमें अग्रलिखित मूल्य प्रदान करता है -

1. कल्याण	2. हित
3. निःस्वार्थता	4. परमार्थ
5. सेवा	6. अनुशासन
7.समयपालन	8. पुनर्जन्म
9. दान	10. अहिंसा
11. प्रेम	12. विद्या।

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानानां उपासते।

(ऋग्वेद : 10-191-2)

(मिलकर चलो, प्रेमपूर्वक संवाद करो, ज्ञानी बनो और श्रेष्ठ पूर्वजों की भांति कर्त्तव्य का पालन करो।)

इस मंत्र से प्राप्त मूल्य हैं :-

1. एकता	2. सत्संग	3. संगठन
4. सहयोग	5. मानवता	6. कर्त्तव्य।

तेजाऽसि तेजो मयि धेहि वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि
बलमसि बलं मयि धेह्योजोऽस्योजो मयि धेहि मन्युरसि
मन्युं मयि धेहि सहोऽसि सहो मयि धेहि।

(यजुर्वेद : 19-9)

(हे ईश्वर! मुझे तेज, ओज, बल, पराक्रम, मन्यु और सहनशीलता दीजिए।)

इस मंत्र से उपजे मूल्य हैं -

1. ईशभक्ति	2. प्रार्थना	3. तेज
4. इन्द्रियजय	5. वीरता	6. बल
7. शक्ति	8. पराक्रम	9.दुष्टदमन
10. सुक्रोध	11. सहिष्णुता	12. सहनशीलता
13. धैर्य		

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

(यजुर्वेद : 19-30)

(संकल्प से दीक्षा, उससे दक्षता, फिर श्रद्धा एवं अन्त में सत्यरूपी सफलता प्राप्त होती है।)

यह मंत्र इन मूल्यों का स्रोत है:-

1. व्रत	2. संकल्प	3. समर्पण
4. दीक्षा	5. तप	6. साधना
7. नियमपालन	8. पवित्रता	9. दक्षता
10. निरन्तरता	11. श्रद्धा	12.सत्य
13. सफलता।		

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दुरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

(यजुर्वेद : 34-1)

(जागते एवं सोते समय दूर-दूर जाने वाला, इन्द्रियों का प्रकाशक, दिव्यतायुक्त मेरा मन शिव संकल्प करने वाला हो।)

यह मंत्र अग्रांकित मूल्यों की शिक्षा देता है:-

1. जाग्रत	2. स्वप्न	3. सुषुप्ति
4. निद्रा	5. अन्तःकरण	6. शिवता
7.एकताग्रता।	8. चंचलता	9.दिव्यता

द्यौ शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः
शान्तिरोषद्ययः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म
शान्ति सर्वं शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।

(यजुर्वेद : 36-17)

(पृथ्वी, जल, नभ, औषधियाँ, वनस्पतियाँ, इन्द्रियाँ, ज्ञान, समस्त आकाशीय पिण्ड एवं मेरा हृदय शान्ति से युक्त हो।)

इस मंत्र से शान्ति का जीवन-मूल्य प्राप्त होता है।

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं
श‍ृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः
स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।

(यजुर्वेदः 36-24)

(सबके द्रष्टा एवं कल्याणकर्त्ता ईश्वर की कृपा से हम सौ वर्ष, प्रत्युत उससे भी अधिक समय तक अदीनतापूर्वक जीयें, देखें, सुनें एवं सम्भाषण करें।)

इस मंत्र से भी अनेक मूल्य प्राप्त होते हैं यथा :-

1. दर्शन	2. न्याय	3. दया
4. कृपा	5. सर्वहित	6. आरोग्य
7. जीवन	8. आयुष्य	9. अदीनता
10. स्वतंत्रता।		

विद्या चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।।

मौन और एकान्त आत्मा के सर्वोत्तम मित्र हैं।

(यजुर्वेद : 40-14)

(विज्ञान एवं आत्मज्ञान दोनों का धारक विद्वान् विज्ञान से दु:ख-निवृत्ति एवं आत्मज्ञान से मोक्ष-प्राप्ति करता है।)

यह मंत्र हमें ये मूल्य सिखा रहा है :-

1. ज्ञान	2. विज्ञान	3. मृत्यु
4. दु:ख	5. अमरत्व	6. सुख
7. मोक्ष।		

मधुमन्मे निक्रमणं मधुमन्मे परायणम्।
वाचा वदामि मधुमद् भूयासं मधुसंदृशः।।

(अथर्ववेद : 1-34-3)

(मेरी वाणी, आना, जाना एवं स्वभाव मधुर हो।)

माधुर्य का जीवन-मूल्य इस मंत्र से प्राप्त होता है।

कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।
गोजिद् भूयासमश्वजिद् धनंजयो हिरण्यजित्।।

(अथर्ववेद: 7-50-8)

(दाहिने हाथ में पुरुषार्थ एवं बायें हाथ में विजय से युक्त होकर मैं इन्द्रियों, राज्यों, धन एवं स्वर्ण का जयी बनूं।)

इस मंत्र से प्राप्य मूल्य हैं :-

1. पुरुषार्थ	2. कर्म	3. श्रम
4. उद्योग	5. भाग्य निर्माण	6. विजय।

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।

(अथर्ववेद:19-15-6)

(मैं मित्र, शत्रु, ज्ञात एवं अज्ञात से दिन एवं रात्रि में अभय रहूँ और सब दिशाओं में मेरी मैत्री हो।)

यह मंत्र भी अनेक मूल्यो का ज्ञान दे रहा है :-

1. मित्रता	2. दिवस
3. रात्रि	4. अभयता।

उपर्युक्त 72 मूल्यों का संकलन वेदमंत्रों से किया गया है। वेदमंत्रों से अन्य असंख्य मूल्य प्राप्त हो सकते हैं। अत: वेदों का श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन निरन्तर करते रहना चाहिए।

आचार्य रूपचन्द 'दीपक'
6105, पतंजलि योगपीठ फेज-2,
हरिद्वार -249405 (मोबाइल 9839181690)

सन्तानों को गुरुकुल में क्यों पढ़ाएं?

ब्र० अरूण "आर्यवीर"

प्रश्न : सन्तानों को गुरुकुल में क्यों पढ़ाएं?

उत्तर : प्रथम तो वेद में ईश्वर ने स्पष्ट आदेश दिया है कि अपने सन्तानों को गुरुकुल में आचार्य से शिक्षा दिलाओ। इस आज्ञा के उल्लंघन के स्पष्ट दुष्परिणाम वर्तमान छात्रों में देखे जा सकते हैं। माता-पिता की दिनचर्या घरों में आदर्श एवं नियमित हो नहीं पाती। सभी माता-पिता अपने को तपस्वी नहीं बना पाते। जीवन में आवश्यक संयम का स्तर भी प्राय: कम ही होता है। लाड़-प्यार में बच्चों को योजनाबद्ध तरीके से बिगाड़ा जाता है। दूसरा कारण लार्ड मैकाले की भोगप्रधान दुनिया में ढकेलने वाली वर्तमान शिक्षा प्रणाली जो व्यावसायिकता के चरम पर है और विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास नहीं कर पा रही है। भोगवादिता में आज की पीढ़ी आध्यात्मिक सुख को तो छोड़ दीजिए बल्कि वे पीढ़ी संसार का सुख भी सही अर्थो में नही ले पा रही है। मानव जीवन में बढ़ते अस्पताल एवं चिकित्सा प्रावधान इस बात के सशक्त प्रमाण हैं। इनसे तो अनपढ़ पशु-पक्षी भले जो मानव से अधिक प्राकृतिक जीवन जीते हैं और सुखी हैं।

प्रश्न: गुरुकुलों में रोजगार-उन्मुख शिक्षा तो होती नहीं हम अपने बच्चों को पुरोहित-पण्डित नहीं बनाना चाहते फिर हम क्यों अपने बच्चों को गुरुकुलों में पढ़ाएं?

उत्तर: अपने आसपास नजर घुमाइए क्या गुरुकुलों में पठित कोई युवक या युवती आपको बेरोजगार दिखाई देते हैं? नहीं, ये आप की भ्रान्ति है कि गुरुकुलीय शिक्षा व्यक्ति को केवल पुरोहित या पण्डित बना देती है। वर्तमान पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली से पूर्व भी भारत मे वेदमूलक संस्कृत शिक्षा प्रणाली विद्यमान थी। उस समय भारत हर क्षेत्र में विश्वगुरु के सिंहासन पर विराजमान था। फिर विद्वान या पण्डित बनना कतई बुरा नहीं है। क्या डॉक्टर, इंजीनियर, वकील आदि सुशिक्षित लोगो को वेद-विद्वान को सम्मानपूर्वक चरणस्पर्श कर, उन्हें उच्चासन पर बिठा उपदेश सुनते नहीं देखे आपने?

मौन के वृक्ष पर शान्ति के फल लगते हैं।

प्रश्न : गुरुकुलों में शिक्षा का आज कथित स्तर है क्या?

उत्तर: इस का कारण भी आप सम्भ्रान्त गृहस्थी हैं जिन्होंने अपने मेधावी बच्चों को गुरुकुल में नहीं भेजा। प्राय: गुरुकुलों में उद्दण्डी, उच्छृंखल, ढीठ, पढने में अनुत्साही बच्चों को माता-पिता भेजते हैं जिसके कारण गुरुकुलों को सुधारगृहों का स्वरूप प्राप्त हुआ है। गुरुकुलों के इतिहास को देखें तो इनके सुधार का कार्य भी गुरुकुलों ने बहुत अच्छे से निभाया है। यदि सरकार की ओर से सहशिक्षा रहित गुरुकुल शिक्षा प्रणाली अनिवार्य कर दी जाए तथा वेदमूलक शिक्षा को प्राधान्य दिया जाए तो वर्तमान गुरुकुलों को भी रोजगार उन्मुख शिक्षणालयों में बदला जा सकेगा।

अपनी बातों की पुष्टि में स्वानुभव भी बताना चाहूंगा कि जिस गुरुकुल मे मैं पढ़ाता हूँ वहाँ के छात्रों का शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास, हर स्तर पर पास के ग्रामों, नगरों के हम-उम्र बालकों की तुलना में कहीं अधिक होता है। उनकी दिनचर्या नियमित है, ब्रह्म-मुहूर्त में सूर्योदय से पूर्व 5 बजे जगते हैं, रात्रि 9.30 के बाद सो जाते हैं। अपने जीवन में बच्चे पूर्णत: आत्मनिर्भर हैं अर्थात् खुद से सम्बधित सभी कार्यो में वे स्वावलम्बी हैं, इतना ही नहीं सब्जी उगाने आदि कार्य हो या गोशाला में गायों के समस्त कार्य हो या भोजन पकाने सम्बंधी कार्य ये स्वयं करते हैं। हर कार्य समय से पूर्ण होते हैं। प्रतिदिन दोनों समय प्राणायाम, आसन, व्यायाम, हवन एव ध्यान-संध्या उनके दिनचर्या का अनिवार्य अंग है। सबसे बड़ी बात उनके जीवन में कहीं से कहीं तक फिल्मी गाने, फिल्में या टी.वी. सीरियल, मोबाईल, इंटरनेट आदि प्रसार माध्यमों से परोसी जानेवाली गन्दगी का लेशमात्र भी आगम नहीं है इसलिए मुझे कहने में संकोच नहीं कि हर माता-पिता को आँख मूंदकर अपने बच्चों को गुरुकुलों में भेजना चाहिए।

रिफाइंड ऑयल : आपके स्वास्थ्य से खिलवाड़

केरल आयुर्वेदिक युनिवर्सिटी आफ रिसर्च केन्द्र के अनुसार - '**हर वर्ष 20 लाख लोगों की मौत का कारण बनता है रिफाइंड ऑयल।**' आखिर समाजसेवी भाई राजीव दीक्षित के कहे हुए कथन सत्य हो रहे हैं।

रिफाइंड ऑयल से डीएनए डैमेज, आरएनए नष्ट, हार्ट अटैक, हार्ट ब्लॉकेज, ब्रेन डैमेज, लकवा, शुगर, बी.पी., नपुंसकता, कैंसर, हड्डियों का कमजोर होना, जोड़ों का दर्द, कमर दर्द, किडनी डैमेज, लीवर खराब, कॉलेस्ट्रोल, आंखों की रोशनी कम होना, प्रदर रोग, बांझपन, पाइल्स, त्वचा रोग आदि सैकड़ों रोग उत्पन्न होते हैं।

कैसे बनता है रिफाइंड ऑयल ?

बीजों का छिलके सहित तेल निकाला जाता है। इस विधि में जो भी अशुद्धियाँ तेल में आती है, उन्हें साफ करने, तेल को स्वाद गंद व कलर रहित करने के लिए रिफाइंड किया जाता है।

वाशिंग : वाशिंग करने के लिए पानी, नमक, कास्टिक सोडा, गंधक, पोटेशियम, तेजाब व अन्य खतरनाक एसिड इस्तेमाल किये जाते है ताकि अशुद्धियां इससे बाहर जो जाएं। इस प्रक्रिया में तारकोल की तरह गाढ़ा अवशेष निकलता है जो कि टायर बनाने में काम आता है। यह तेल एसिड के कारण जहर बन गया है।

न्यूट्रालाइजेशन : तेल के साथ कास्टिक या साबुन को मिक्स करके 180 डिग्री फारेनहाइट पर गर्म किया जाता है। इससे इस तेल के सभी पौष्टिक तत्त्व नष्ट हो जाते हैं।

बलीचिंग : इस विधि में प्लास्टर आफ पेरिस (मकान बनाने में काम आने वाली पी.ओ.पी.) का उपयोग करके तेल का कलर और मिलाये गये कैमिकल को 130 डिग्री फारेनहाइट पर गर्म करके साफ किया जाता है।

हाइड्रोजीनेशन : एक टैंक में तेल के साथ 'निकेल और हाइड्रोजन' को मिक्स करके हिलाया जाता है। इन सारी प्रक्रियाओं में तेल को 7-8 बार गर्म व ठंडा किया जाता है जिससे तेल में पॉलीमर्स बन जाते है। उससे पाचन प्रणाली को खतरा होता है और भोजन न पचने से सारी बीमारियाँ उत्पन्न होती है।

'**निकेल**' एक प्रकार का लोहा होता है जो हमारे शरीर में डीएनए, आरएनए, त्वचा, लीवर आदि अंगों को नुकसान पहुँचाताा है। रिफाइंड ऑयल के सभी तत्त्व नष्ट हो जाते और एसिड मिल जाने से यह भीतरी अंगों को नुकसान पहुंचाता है।

जयपुर के प्रोफेसर **राजेश गोयल** के अनुसार गंदी नाली का पानी पी लें, उससे कुछ भी नहीं होगा क्योंकि हमारी शरीर में प्रतिरोधक क्षमता उन बैक्टीरिया को लड़कर नष्ट कर देता है लेकिन रिफाइंड तेल खाने वाला व्यक्ति अकाल मृत्यु होना निश्चित है।

हमारा शरीर करोड़ों कोशिकाओं से मिलकर बना है, शरीर को जीवित रखने के लिए पुरानी कोशिकाएँ नई कोशिकाओं में परिवर्तित होती रहती है। नई कोशिकाएं बनाने के लिए शरीर खून का उपयोग करता है, यदि रिफाइंड तेल का उपयोग करते हैं तो खून में टॉक्सीन की मात्रा बढ़ जाती है और शरीर को नई कोशिकाएं बनाने में अवरोध आता है। ऐसे में कैंसर, डाइबीटिज, हार्ट अटैक, ब्लड प्रेशर आदि बीमारियां उत्पन्न होती है।

रिफाइंड तेल बनाने की प्रक्रिया से तेल बहुत ही महंगा हो जाता है, तो इसमें पॉम ऑयल मिक्स किया जाता है। पॉम ऑयल स्वयं एक धीमी मौत है।

सरकार का आदेश : विडम्बना है कि हमारे देश की पॉलिसी अमेरिका सरकार के इशारे पर चलती है। अमेरिका का पॉम खपाने के लिए, यूपीए सरकार ने एक अध्यादेश लागू किया कि प्रत्येक तेल कंपनी को 40 प्रतिशत खाद्य तेलों में पॉम ऑयल मिलाना अनिवार्य है अन्यथा लाईसेंस रद्द कर दिया जाएगा। इससे अमेरिका को बहुत फायदा हुआ, पॉम के कारण लोग अधिक बीमार पड़ने लगे, हार्ट अटैक की संभावना 99 प्रतिशत बढ़ गई तो दवाइयाँ भी अमेरिका से आने लगी।

एक हैरानी वाली यह है कि हृदय में लगने वाली स्प्रिंग जिसे

आमतौर पर छल्ला (पेन की स्प्रिंग से भी छोटा-सा छल्ला) कहा जाता है, लगभग दो लाख रुपये में बिकता है। ऐसे में अमेरिका को दोनों ओर से लाभ हो रहा है रिफाइंड ऑयल में उनका पॉम मिलाया जाता है और जब रिफाइंड ऑयल के कारण लोग बीमार पड़ते हैं तो दवाइयाँ भी अमेरिका की कंपनियों की बिकती है।

सोयाबीन एक दलहन है, तिलहन नहीं

दलहन में मूंग, मोठ, चना, सोयाबीन और सभी प्रकार की दालें आती हैं जबकि तिलहन में तिल, सरसों, मूंगफली, नारियल और बादाम आदि आते हैं अतः सोयाबीन ऑयल, पूर्णरूप से पॉम ऑयल ही होता है। पॉम ऑयल को रिफाइंड बनाने के लिए सोयाबीन का उपयोग किया जाता है।

सोयाबीन की एक विशेषता होती है कि यह प्रत्येक तरल पदार्थ को सोख लेता है, पॉम ऑयल एकदम काला और गाढ़ा होता है, उसमें साबुत सोयाबीन डाल दिया जाता है जिससे सोयाबीन बीज उस पॉम ऑयल की चिकनाई को सोख लेता है और फिर सोयाबीन की पिसाई की जाती है, जिससे चिकना पदार्थ (तेल) तथा आटा अलग-अलग हो जाता है। सोयाबीन के आटे से सोया मंगोडी बनाई जाती है।

अपनी संतुष्टि के लिए आप किसी तेल वाले के पास जाकर सोयाबीन का तेल निकालने के लिए कहें। आप चाहे उसे कितने भी पैसे दें मगर वह सोयाबीन का तेल नहीं निकालेगा। इसका कारण यह है कि सोयाबीन का आटा बनता है, तेल नहीं।

सूरजमुखी, चावल की भूसी (चारा) आदि के तेल रिफाइंड के बिना नहीं निकाला जा सकता, अतः ये जहरीले ही हैं।

फॉर्च्यून अर्थात् आपके परिवार के फ्यूचर का अंत करने वाला और सफोला अर्थात सांप का बच्चा (सांप के बच्चे को सफोला कहते हैं) पुराने समय में लोग 100 वर्ष या इससे भी अधिक आयु प्राप्त करते थे और सभी जिम्मेदारियों पूरी करके मोक्ष प्राप्त करते थे मगर आज अचानक हार्ट अटैक से अकाल मृत्यु का ग्रास बन जाते हैं। अपने बच्चों के लिए बहुत सपने संजोए मगर अकाल मृत्यु! अधूरी इच्छाओं से मरने के कारण उसे मोक्ष प्राप्त नहीं होता।

राम नहीं किसी को मारता, न ही यह राम का काम।
अपने आप ही मर जाते हैं, कर करके खोटे काम।।

अर्थात गलत खानपान और आचरण के कारण अकाल मृत्यु हो जाती है।

'सकल पदार्थ है जग माही। कर्महीन नर पावत नाहीं।।'

अर्थात् कर्महीन व आलसी व्यक्ति संसार की श्रेष्ठ वस्तुओं

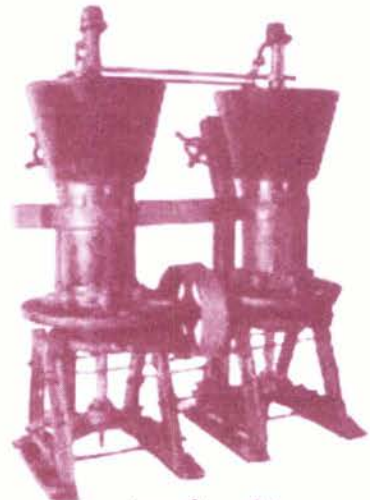

'कच्ची घाणी'

का सेवन नहीं कर सकता।

तन, मन, धन और आत्मा की तृप्ति के लिए सिर्फ कच्ची घाणी, तिल, सरसों, मूंगफली, नारियल, बादाम आदि का तेल ही प्रयोग करना चाहिए। पुष्टिवर्धक और शरीर को नीरोग रखने वाला सिर्फ कच्ची घाणी का निकाला हुआ तेल ही इस्तेमाल करना चाहिए।

यहाँ विचार योग्य बात यह है कि आजकल सभी कंपनियाँ अपने उत्पादों पर '**कच्ची घाणी**' का तेल ही लिखती है, जो कि लोगों के साथ धोखा है सरासर झूठ है।

कच्ची घाणी का मतलब है लकड़ी की बनी हुई ओखली और लकड़ी का ही मूसल होना चाहिए। इसे बैल द्वारा चलाया जाता था। आजकल बैल की जगह मोटर लगा दी गई है मगर मोटर की गति भी बैल के समान ही होनी चाहिए मगर आजकल तो बड़ी-बड़ी कंपनियों ने लोहे की बड़ी-बड़ी मशीने लगा रखी है, उनका बेलन बहुत तेज गति से घूमता है जिससे तेल के सभी पौष्टिक तत्त्व नष्ट हो जाते है। उसके बावजूद ऐसी कंपनियाँ अपने उत्पादों पर 'कच्ची घाणी' लिखकर लोगों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रही हैं।

बुद्धिजीवी पाठकों! हमारा उद्देश्य किसी कंपनी या उसके उत्पादों का विरोध करना नहीं है, हम तो केवल आपको आपके स्वास्थ्य के प्रति सचेत कर रहे हैं। अज्ञानतावश आप स्वयं व अपने परिवार को धीमा जहर खिला रहे हैं और बीमारियों को निमंत्रण दे रहे हैं। इस बारे में थोड़ा विचार करें और अपने खानपान में शुद्ध खाद्य पदार्थों का ही प्रयोग करें। **संकलन : डॉ. ए. के. त्यागी**

साभार : परिषद् प्रभा

कोई भी कार्य करने से पहले विचार करें

संसार में ९० प्रतिशत दु:ख का कारण केवल यह है कि मनुष्य जो कुछ करता है, उस पर या तो विचार नहीं करता या विचार द्वारा किसी ठोस निष्कर्ष तक पहुँचने से पूर्व ही कार्य आरम्भ कर देता है। नासमझी से किये जाने वाले कार्यो के परिणाम भी अधूरे और दु:खदायी ही होते हैं। सन्त विनोबा का यह कथन नितान्त सत्य है -

'विचार का चिराग बुझ जाने से आचार अंधा हो जाता है।'

इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि यदि कार्य के परिणाम पर कुछ सोचने से पूर्व ही यदि मनमाने ढंग से या उतावलेपन में कुछ करने लगें तो उससे विपरीत परिणाम ही उत्पन्न होते हैं। कई बार तो मनुष्य ऐसी उलझन में पड़ जाता है कि उसे यह भी नहीं सूझता कि अब बचाव के लिए क्या किया जाए ? इस दु:ख से दु:खी होकर अधिकांश व्यक्ति अपनी शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों का अपव्यय कर लेते हैं। किसी कार्य का आरम्भ करने से पूर्व यदि उसके व्यावहारिक पहलुओं पर विचार कर लिया जाए तो अनेक कठिनाइयों से बचा जा सकता है, शारीरिक तथा मानसिक शक्तियों का अपव्यय रोका जा सकता है।

किसान इस बात को जानता है कि किसी खेत को कितनी बार पानी देना है ? उसकी जुताई कब और कैसे तथा कितनी बार करनी है ? उसकी घास, पात और निराई कब होगी ? कौन-सा बीज किस ऋतु में बोने से फसल पैदा होगी ? इन सभी सम्भावनाओं पर उसकी दृष्टि खुली हुई होती है, तभी वह अच्छी पैदावार ले पाता है। कार्तिक की फसल आषाढ़ में आषाढ़ की कार्तिक में, सूखे- अनसुखे कैसे ही खेत में उलटा-सीधा कोई भी बीज डाल देने से फसल हो जाना मुश्किल है। यदि किसी तरह हो भी जाए तो वह अच्छी भी नहीं होगी और ठीक ढंग से उपजाई गई फसल से बहुत ही घटिया किस्म की होगी।

मनुष्य भी एक तरह का किसान है, जो संसार में कर्म की खेती करता है। विचार कर्म का बीज है, यदि उसे उपयुक्त समय, उपयुक्त वातावरण न मिले तो लाभ होने की अपेक्षा हानि होने की ही संभावना अधिक रहेगी। इन दिनों ऐसे कर्मो की बाढ़-सी आ गई है, जिन्हें लोग बिना विचार किये हुए करते हैं और जब उनके दुष्परिणाम भुगतने पड़ते हैं, तो ईश्वर, भाग्य, समाज और सरकार पर तरह-तरह के आरोप लगाते हैं। इतने पर भी उनका दु:ख नष्ट नहीं होता, एक बार का उपजा कर्मफल चाहे वह दु:ख दे या सुख, उसे तो भुगतना ही पड़ता है।

सोचते भी हैं तो अपनी शक्ति और सामर्थ्य से बहुत बढ़ा-चढ़ाकर। पर परिस्थितियों में एकाएक परिवर्तन तो हो नहीं जाता। कर्ज लिऐ हुए धन को चुकाने के लिए भी तो कमाई ही करनी पड़ती है फिर उस समय जब सारी कमाई ब्याजसमेत उगाही में ही चली जाएगी, तब अपना तथा बच्चों का क्या होगा ? इन नासमझ लोगों का जीवन ही एक तरह से उधार हो जाता है। वे दूसरों का ही मुँह ताकते रहते है। अपनी शक्तियों का उपयोग कर कुछ अच्छी परिस्थिति प्राप्त करने की शक्ति व सामर्थ्य का उनमें अभाव होता है।

उल्टे-सीधे कार्य जिनका कोई पूर्वाकार नहीं होता, वे मनुष्य को कठिन दु:ख देते हैं। चोरों, भ्रष्टाचार, नशेबाजी आदि बुरी आदतें भी ऐसी ही होती है, जिनके परिणाम जाने बिना या जानकर भी धृष्टतापूर्वक लोग उन्हें व्यवहार में ले आते हैं, इनके परिणाम बड़े कष्टकर होते हैं। सबसे हानिकारक वस्तु अविचारिता ही है, जिससे लोग गलत परिणाम भुगतते हैं।

कोई भी कार्य करने से पूर्व अच्छे-बुरे दोनों दृष्टिकोणों से परखें। सोना खरीदा जाता है, तो उसकी कीमत और असलियत दोनों पर विचार किया जाता है। इसी तरह कोई भी कार्य क्यों न हो, उससे लाभ क्या होगा ? इतना सोचने के बाद यदि वे लाभदायक हों और उनसे अनिष्ट की संभावनाएँ न दिखाई पड़ती हों तो ही उन्हें क्रियारूप देना चाहिए।

नशा करना है तो यह भी सोचिए कि उससे शरीर पर कितना बुरा प्रभाव पड़ता है और सामाजिक स्थिति पर उसकी कैसी प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है। कुल मिलाकर यदि उसमें लाभ दिखाई देता हो, तब तो कोई भी उसे बुरा न कहता, पर सभी देखते हैं, नशा मनुष्य के धन को बरबाद करता है, तन को फूंकता है और सामाजिक शान्ति व व्यवस्था को भंग करता है। इन परिणामों का एक काल्पनिक रूप जो बना लेगा, उसके लिए अपमान, अपव्यय तथा उत्तेजनाओं से बचना असम्भव हो जाएगा। यह बात एक नशे पर ही लागू नहीं होती, संसार का कोई भी कार्य हो उसकी अच्छी-बुरी परिस्थितियों पर विचार करने के उपरान्त ही उसे मूर्तरूप देना समझदारी की बात होगी। जो इस समझदारी को जितना अधिक व्यवहार में उतारेगा वह उतना ही सफल व्यक्ति बनेगा, यह निश्चित है।

यह भी ध्यान रहे कि अपने स्वार्थ या सुख-प्राप्ति को ही प्रमुख मानकर आप विचार न करने लग जाएं अन्यथा उसकी बुराइयों की ओर आपका ध्यान भी नहीं जाएगा। विचार उभपक्षीय तथा निष्पक्ष होना चाहिए। अपने सुखों के लिए प्राय: लोग ऐसा ही करते हैं कि वे उसके हानिकारक पहलू पर दृष्टिपात नहीं करते। जुआरी आदमी यही सोचता है कि वही सारा धन जीत लेगा, पर ऐसी मान्यता तो उनमें से प्रत्येक की होती है, यह कोई नहीं सोचता कि जीत तो एक ही की होगी, शेष तो सब हारने वाले ही हैं।

'हारने वालों में मैं भी हूँ' ऐसा जो सोच सकता है वह जरूर बुराइयों से और उसके बुरे परिणामों से बच सकता है। कोई भी विचार एकांगी होता है, तभी बुराइयों को स्थान मिलता है, इसलिए हमारी

...शेष पृष्ठ 21 पर

जो जीने का रास्ता नहीं जानते सिर्फ वे ही लोग मरना चाहते हैं।

वैदिक वर्ण-व्यवस्था

आचार्य दयाशंकर जी

प्रिय पाठकवृन्द! महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जो वेदों के अनुसार वर्ण व्यवस्था का स्वरूप रखा उसी के अनुरूप अपनी स्वल्प तथा सीमित बुद्धि के ज्ञान से पूर्वांक में दो वर्णों का उल्लेख किया। ब्राह्मण को मुख तथा क्षत्रिय को बाहु की उपमा से अलंकृत किया गया। अब आगे के दो वर्णों का उल्लेख प्रस्तुत करता हूँ -

जैसा कि पूर्व में कहा गया है कि इस राष्ट्र को शरीर की उपमा मिली। उस उपमा के अन्तर्गत वैश्य को उदर तथा शूद्र को पैर की उपमा दी गई है। '**उरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत**'' उरु का शाब्दिक अर्थ जंघा होता है जैसे जंघाएं अति वेगवान तथा सर्वत्र पहुँचाकर सभी कार्य को सिद्ध करती है वैसे वैश्य भी अथक परिश्रम करके अन्नादि उत्पन्न कर समस्त समाज तथा राष्ट्र की क्षुधा शान्त करने वाला हो। अब उस प्रभु की अनुपम रचना का साक्षात्कार करने का प्रयास करें। कैसी अद्भुत रचना, परमाणु से लेकर विराट विश्व की अनोखी व्यवस्था, जितनी गहराई में उतरे उससे और अधिक गहराई, सैकड़ों जन्मोपरान्त ऋषि-मुनि अथक प्रयासोपरान्त भी अन्त में जब कोई उस परम पुरुष की रचना का कोई अन्त न पा सके तो नेति-नेति पुकार कर रह गये। सूक्ष्म घटक हो या फिर विराट विश्व की कल्पना जहाँ दृष्टिपात करें वहीं कह उठते हैं -

'**चित्रं देवानामुदगादनीकम्**'

अर्थात् उस विराट पुरुष की सेना विचित्र है, आश्चर्यजनक है, अगम्य है। इस शरीर में बैठा वैश्य रूप उदर वैश्य वर्ण को जिसकी उपमा दी गई, देखो क्या परमात्मा की अद्भुत सेना से सज्जित है कि जब कोई मोटा फल अथवा खाद्य पदार्थ हाथ में आता है तो उसे ज्यों का त्यों अन्दर पेट में नहीं पहुँचाया जा सकता। समस्या खड़ी हो गई क्या करें, तो दांतों ने कहा इसकी व्यवस्था हमारे पास है। जैसे ही हाथ आगे बढ़ा कि दो सजग चौकीदार खड़े जाँच अधिकारी आंखों ने कहा- ठहरो! हमें ये देखने दो इनकी आड़ लेकर कोई राष्ट्र रूपी शरीर में अराजक आतंकवादी तो अन्दर नहीं जा रहा और अपनी गलत भावना से अन्दर कोई रोग पैदा कर इस राष्ट्र देह को कमजोर बनाने की कोशिश तो नहीं कर रहा। दो पहरेदारों ने देखा कि एक छुपा हुआ आतंकवादी छोटा-सा जहरीला कीड़ा, छुपकर जाने की कोशिश कर रहा था कि तुरन्त ही दोनों सैनिकों ने क्षत्रिय (राजा) को आदेश दिया और हाथों (क्षत्रिय) ने उसे बाहर निकाल फेंका तथा फल को आगे बढ़ा दिया परन्तु ये क्या? अभी भी दो सुरक्षा अधिकारी और खड़े थे। उन्होंने रोका- ठहरो! हमारी चैकिंग होने दो, कहीं यह फल गला-सड़ा तो नहीं, कहीं विकृत तो नहीं, दोनों नासिकाओं ने सूंघा, निरीक्षण किया कि ठीक है और आगे बढ़ने की स्वीकृति दी। सबसे छुपकर एक छोटा-सा कंकड़ किसी प्रकार अन्दर पहुँच गया और बहुत प्रसन्न हुआ कि मुझे नहीं रोका गया किन्तु 32 सैनिकों की कतार खड़ी थी जैसे ही कंकड़ अन्दर गया तो 32 कमाण्डों ने उसे वहीं कुचल दिया और जिह्वा को आदेश दिया, इसको बाहर निकाल फेंको। अब अन्न पूर्ण रूप से सुरक्षित था और जैसे ही अन्दर वैश्यरूपी भण्डार में गया, वैश्य ने अपने पास कुछ भी नहीं रखा और समस्त शरीर के अंग-प्रत्यंग को यथावत् रस के रूप में प्रदान कर दिया। यही तो वैश्य का यज्ञ है, कहीं पर भी भुखमरी देखें तो वहीं अन्न को पहुँचाने का प्रबन्ध वैश्य करे यही श्रेष्ठतम कर्म '**यज्ञ**' है।

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है - '**स्वधर्मे निधनं श्रेयः पर धर्मोभयावह**' अर्थात् अपने-अपने कर्त्तव्यों का निष्ठापूर्वक यथावत् निर्वहन करते हुए यदि मृत्यु भी हो जाये तो भी उसे कोई अवसाद नहीं होता बल्कि जो यज्ञ का फल है वह उसे प्राप्त हो जाता है। इसके विपरीत अपने कर्त्तव्य कर्मों का दुरुपयोग कर अथवा छोड़कर अन्य कितना भी श्रेयस्कर कर्म को ग्रहण करता है वह महान् अनर्थ का कारण बन जाता है। सीमा पर तैनात सुरक्षाकर्मी अपना कर्त्तव्य छोड़कर हथियार रखकर सन्ध्या, हवन करने बैठ जाये, यह श्रेयस्कर कर्म होते हुए भी महान् अनर्थ का कारण बन जाता है, उसका यज्ञ, सन्ध्या वही है कि देश की सीमा में कोई आतंकवादी शत्रु प्रवेश न कर जाए।

जैसे माँ अपने बच्चों को भूख को स्वयं भूखी रहकर भी मिटाती है, उसी प्रकार वैश्य का भी यही धर्म है कि समाज में प्रत्येक वर्ण अन्न के अभाव में भूखा न रहे। सोचिए! जब व्यक्ति भोजन करना चाहता है, मात्र भोजन ही नहीं खाता अपितु भोजन के रूप में यज्ञ करता हुआ अपने जीवन में उससे प्रेरणा भी प्राप्त करता है क्योंकि यज्ञ का सार '**इदन्नमम**' अर्थात् यह मात्र मेरा नहीं है, यह समस्त प्राणिमात्र का है, ईश्वर का पदार्थ है और पिता की सम्पत्ति पर सभी का यथावत् अधिकार होता है। अन्न मुख में गया कि मुख ने यज्ञ आरम्भ कर दिया और कहा '**इदन्नमम**' ये मेरा नहीं है अपितु समस्त शरीर के अंगों का इस पर अधिकार है। वैश्य वर्ग भी यही भावना रखता है कि मैं एक

संसार में मृत्यु के समान निश्चित कोई चीज नहीं है।

अन्न का कण भूमि को दे रहा हूँ, ये यज्ञ है। यज्ञ में जो भी पदार्थ अग्नि में अर्पण किया जाता है वह जितना आहूत किया उतना ही नहीं मिलता अपितु सहस्रो गुणा बढ़कर मिलता है, उसी प्रकार भूमि को दिया हुआ एक अन्न का कण मात्र एक नहीं मिलता अपितु एक के परिणामस्वरूप असंख्य प्राप्त होते हैं। वैश्य यही समझकर यज्ञ करता है कि वह भूमि को एक आहूत करता है, यही सोचकर करता है कि इसके बदले जो अनेक रूप में प्राप्त होगा उनमें से मैं मात्र एक ही प्राप्त करुँगा बाकि समाज के प्राणियों के हितार्थ होगा। उनकी भूख मिटाने का कारण होगा, यही भावना उस वैश्य की श्रेष्ठतम यज्ञ है। उसने जितना अन्न भूमि को प्रदान किया है मात्र उतना ही अपने भक्षणार्थ रखकर बाकी समाज की भूख मिटाने हेतु संकल्प लेता है। इस प्रकार वर्ण व्यवस्था का तीसरा स्तम्भ वैश्य समाज तथा राष्ट्र को अन्न, पशु आदि से सुदृढ़ बना अपने दायित्व का निर्वहन कर राष्ट्र यज्ञ में अपनी आहूति देता है।

शूद्र : अब चतुर्थ वर्ण जो स्तम्भ बनकर खड़ा है वह है शूद्र। शूद्र को न्यून नहीं समझ लेना चाहिए, समाज निर्माण में उसकी भूमिका पैर के समान है। '**पद्श्यां शूद्रोऽजायत**' इसकी उपमा वेद पैरों से देता है। कल्पना कीजिए, एक हृष्ट पुष्ट व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न होते हुए भी यदि पदविहीन हो तो उसकी स्थिति क्या होगा? वह यथेच्छ स्थान पर नहीं पहुँच पाता। वह लंगड़ा, पंगु बनकर कष्ट भोगता है। अत: शूद्र को न्यून, तुच्छ, नीच समझकर इसकी अवहेलना नहीं करनी चाहिए, इसको तिरस्कृत करना समूचे राष्ट्र को पंगु तथा कमजोर बनाने की सोच है। इनका स्थान राष्ट्र निर्माण में बहुत महत्त्वपूर्ण है। यहाँ एक दृष्टान्त उपयुक्त होगा-

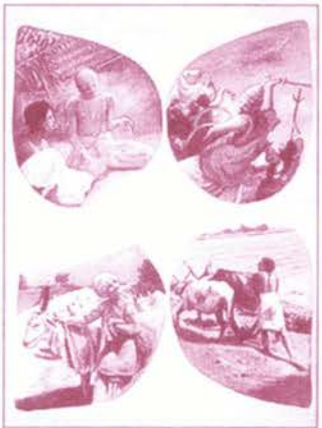

'**एक बार** शरीर को बहुत तीव्र भूख लगी। '**प्राणमुउत्क्रामत्**' प्राण निकलने को तैयार थे, अचानक एक वृक्ष का सुन्दर पका फल दिखाई दिया। समस्त अंग प्रत्यंग हर्षित हो उठा और सोचना लगा इस फल से मेरी क्षुधा शान्त होगी। अब देखिए वर्ण व्यवस्था का योगदान, वहाँ वृक्ष के पास कैसे पहुँचा जाए तो शूद्र(पैर) ने कहा ये दायित्व हमारा है और सम्पूर्ण अंगों को अपने ऊपर लादकर वृक्ष के समीप पहुँचा दिया। आगे क्षत्रिय (हाथ) बोले- अब कार्य हमारा है, कांटों की परवाह न करते हुए (क्षत्रिय) हाथ आगे बढ़े और सावधानी से फल को तोड़ लिया। फल वैश्य के पास अन्दर उदर में पहुँच गया और उदर ने सभी को बांट दिया। अब कल्पना कीजिए ब्राह्मण ने फल का ज्ञान कराया, शूद्रों ने वहाँ तक पहुँचाया, क्षत्रिय ने उस अन्न के भाग को विभाजित कर सभी को तृप्त कर दिया। शरीर फिर स्वस्थ और मजबूत हो गया। यही है वर्ण व्यवस्था का वास्तविक स्वरूप किन्तु मध्य युग में शूद्रों का अति तिरस्कार किया गया, उन्हें अछूत माना गया, इन पाखण्डी, दम्भी, मूर्ख, विपरीत ज्ञान के अनुयायियों ने इनकी अवहेलना की जिससे समाज की, राष्ट्र की शक्ति खंडित हो गयी। समाज बिखर सा गया। राष्ट्र पंगु बना दिया। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं -

संसार में किसका समय है एक सा रहता सदा,
है निशी दिवा-सी घूमती सर्वत्र विपदा सम्पदा।
जो आज एक अनाथ है नर नाथ कल होता वही,
जो आज उत्सव मग्न है, कल शोक से रोता वही।।

(भारत-भारती)

भारतवर्ष के भाग्य का उदय हुआ। समय ने करवट बदली, स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का उदय हुआ। ऋषि दयानन्द ने सम्पूर्ण भारत पर दृष्टिपात किया और उन कमजोरियों को खोजा जो शक्ति, समृद्धियुक्त विश्वगुरु आर्यावर्त्त देश भारत की अस्मिता, यहाँ की वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति को नोंच-नोंच कर खा रहे थे, उन तथाकथित धूर्त अवैदिक धर्म के ठेकेदारों को अपने वेद शास्त्र, ब्राह्मण ग्रन्थ आदि के तेज तर्कबाणों से धराशायी कर उन अछूतों व शूद्रों को जो सदियों से तिरस्कृत तथा अपमानित थे, फिर से हृदय लगाया और उनके लिए भी वेदादि पढ़ने-पढ़ाने का बन्द दरवाजा खोल दिया।

यथेमां वाच कल्याणीमावदानिजनेभ्य:।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्रायचार्याय च स्वाय चारणाय।।

आदि वेदों का प्रमाण देकर सिद्ध किया कि केवल धर्म के बने ठेकेदारों के लिए ही वेद का प्रकाशरूपी ज्ञान प्राप्त करना नहीं अपितु मानवमात्र के लिए है। सभी को वेद पढ़ने-पढ़ाने का यज्ञादि कर्मकाण्ड करने का अधिकार है। इस प्रकार जातियों में विभाजित बिखरी पड़ी शक्ति एकत्रित करने का सफल प्रयास हुआ और शूद्रों का जो चतुर्थ स्तम्भ बनकर समाज तथा राष्ट्र को थामे हुए है उसे उसी सम्मानित स्थान पर लाकर खड़ा कर दिया।

- आचार्य दयाशंकर,
संस्कृत प्राध्यापक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

फल की चिन्ता

नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

चिन्ता मनुष्य को दीमक की तरह अन्दर से खोखला कर देती है। चिन्ता बी.पी., शुगर जैसी बीमारियों को जन्म देकर मनुष्य को चिता की ओर धकेल देती है। चिन्ता और चिता में केवल एक बिन्दु का फासला है। लेकिन फिर भी मनुष्य सदैव अपने कर्मफलों की चिन्ता में दु:खी रहता है। हर व्यक्ति स्वतंत्रकर्ता के रूप में किसी भी कार्य को करने ना करने वा अन्यथा किसी अन्य प्रकार से करने के लिए स्वतंत्र होने के कारण अपने द्वारा संपादित हर कर्म का कर्त्ता और कर्त्ता होने के कारण ईश्वरीय न्याय-व्यवस्था में उसके फल का भोक्ता होता है। हर मनुष्य अपने द्वारा किये गये दुष्कर्मों को भली भांति जानता है और यह भी मानता है कि उसके दुष्कर्मों का फल ईश्वरीय न्याय-व्यवस्था में दण्डस्वरूप किसी विपत्ति, कष्ट के रूप में अवश्य मिलेगा।

हम सभी **'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'** के सिद्धान्त से परिचित हैं। यह हमारे लिए संभावित फलों की चिन्ता का एक प्रमुख कारण है। चिन्ता का दूसरा कारण उस फल की चिन्ता है जिसे हम प्राप्त करना चाहते हैं। बिना पुरुषार्थ किये वांछित लक्ष्य की प्राप्ति की चिन्ता हमें बहुत सताती है। चिन्ता करने से लक्ष्य की दूरी और अधिक बढ़ जाती है। कर्म करने से मनुष्य उतना नहीं थकता जितना उस कर्म को करने व फल की प्राप्ति की चिन्ता से थक जाता है। सीधे सरल शब्दों में चिन्ता हमारे कार्य करने की ऊर्जा को क्षीण कर देती है और चिन्ता में परेशान व्यक्ति बिना कार्य को प्रारम्भ किये ही हतोत्साहित होकर थक कर बैठ जाता है।

अब प्रश्न उठते हैं :-

1. **क्या बिना फल की कामना के कर्म सम्भव है?**
2. **क्या फल की चिन्ता करनी चाहिए?**
3. **फल की चिन्ता ना करें तो क्या करें?**

योगेश्वर श्रीकृष्ण ने तो विवाद में फंसे अर्जुन को गीता का सन्देश देते हुए निष्काम भाव से किये गये परोपकार के यज्ञीय कार्यों को सर्वश्रेष्ठ कर्मों की श्रेणी में रखा। यह ठीक है कि फल की कामना चिन्ता का मुख्य कारण बनती है और ऐसे कर्म साधारणतया मनुष्य के स्वयं के स्वार्थ के वशीभूत होते हैं। वैसे भी **'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'** कहकर योगेश्वर श्रीकृष्ण ने मनुष्य द्वारा कर्त्ता के रूप में कर्म करने पर तो अधिकार बताया है परन्तु फल की प्राप्ति के लिए कर्म का कर्त्ता ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के ही अधीन है अत: जब फल देना हमारे अधिकार क्षेत्र की बात है, उस कर्म को ना करके अपने अधिकार क्षेत्र से बाहर की चिन्ता किसी भी व्यक्ति को उसे लक्ष्य तक कैसे ले जा सकती है। जैसे एक परीक्षार्थी के लिए परीक्षा की विषयवस्तु का ज्ञान लेना, पढ़ना और परीक्षा देना तो उसके अधिकार में आता है परन्तु परीक्षाफल तो परीक्षक के अधिकार की बात है। फल की व्यर्थ चिन्ता तो हमें उस बन्दर की तरह बना देती है जो रोजाना आम की गुठली को खोदकर देखता है कि पेड़ बना या आम लगा या नहीं। इस प्रकार वह उसे अंकुरित भी नहीं होने देता। हमारे कर्म तो बीच की तरह हैं, जिन्हें हम खेत में पुरुषार्थ का हल चलाकर बो देते हैं और फिर अपनी ओर से कर्म करते हुए खाद-पानी, दवा आदि से तैयार करते हैं लेकिन हमारे कर्मों के फलों की फसल तो समय आने पर ही तैयार होती है। यहाँ यह भी स्पष्ट है कि यदि हमने बबूल के बीज बोयें है तो आम की फसल कभी नहीं होगी अर्थात् जैसा कर्म करेगा वैसा फल देगा भगवान।

फल की चिन्ता में हमारी हालत वैसी हो जाती है जैसे हम गाड़ी के साथ सामान का बोझ नीचे रखकर उस पर बैठने के स्थान पर बोझों को सिर पर उठाकर बैठें हों। न्याय व्यवस्था में हमारे कर्मों का फल देना ईश्वर पर छोड़ देना ही उचित है। हमें तो केवल अपने अधिकार क्षेत्र अर्थात् अपने द्वारा सम्पादित होने वाले कर्मों का चिन्तन मनन करना चाहिए क्योंकि यानि कर्मों की दिशा यानि चलने का रास्ता उल्टा होगा तो हम अपने लक्ष्य से दूर होते चले जायेंगे। वैसे भी स्वार्थ के वशीभूत किये गये कर्मों के फल की चिन्ता हमें उन कर्मों से लिप्त कर देती है और वह कर्म हमारे बंधन का कारण बनते हैं। जैसे यदि एक मधुमक्खी पराग चुनकर बनाये गये उस मधु का स्वाद लेने के लिए उसमें लिप्त हो जाये तो उसी शहद में फंसकर मर जाती है।

अब अन्त में प्रश्न आता है कि हम फल की चिन्ता ना करें तो क्या करें? इसका सीधा सरल उत्तर है कि हम मनुष्यों को अपने अधिकार क्षेत्र अर्थात् स्वतंत्रकर्ता के रूप में केवल अपने कर्म के सम्पादन से पूर्व उस पर चिन्तन-मनन करना चाहिए और निष्काम भाव से यज्ञीय व परोपकार के सर्वहितकारी कार्यों को करते हुए फल ईश्वर की न्याय व्यवस्था पर पूर्ण आस्था रखते हुए उसकी चिन्ता उसी पर छोड़ देनी चाहिए।

- नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

एकान्त मूर्ख के लिए बंदीगृह और ज्ञानी के लिए स्वर्ग है।

चल उड़ जा रे पंछी

मजीद तो और भी मुश्किल में पड़ गया लेकिन पुलिस वाले ने उसे छोड़ दिया, तू पागल है, कोई अपराधी नहीं। वह भागा घर। जाकर चूल्हे के बगल में खोदा, खजाना वहाँ गड़ा था।

सपने बड़े अजीब होते हैं। आपको वहाँ खजाना दिखलाते हैं, जहाँ बहुत फासला है और वास्तव में तो खजाने आपके पास गड़े हैं। दूर दिखाता है सपना सदा- वार्सा में- राजधानी में, जबकि खजाना आपके पास है। सभी खजाने हमें दूर दिखाई पड़ते हैं।

परमात्मा बहुत दूर दिखाई पड़ता है जबकि उससे ज्यादा पास (नजदीक) कोई भी नहीं, लेकिन पास आप देख नहीं पाते। पास के प्रति आप अंधे हो गये हैं। इशारे करते हैं बुद्ध पुरुष कि खजाने आपके पास हैं।

पक्षी बिल्कुल पास ही बैठा था वातायन पर और उसने उस ढंग से बात कह दी जिस ढंग से बुद्ध भी न कह पाते लेकिन शायद किसी ने न देखा। वे सब बुद्ध की तरफ नजर लगाये थे। बहुत दूर, जहाँ से शब्दों के सन्देश आयेंगे। शब्द तो बहुत दूर हो जाते हैं क्योंकि शब्द तो फीकी खबर है, प्रतिबिम्ब है और बुद्ध एक जीवन्त प्रतीक की तरफ इशारा कर रहे थे।

काश! सुनने वालों में थोड़ी-सी समझ होती, तो वे वहीं देखते जहाँ बुद्ध देख रहे हैं। बुद्ध क्या कहते हैं, यह समझना जरूरी नहीं है। बुद्ध क्या देखते हैं, वहाँ देखना जरूरी है। बुद्ध क्या बोलते हैं इसे देखने की बजाए बुद्ध कैसे हैं वही सार्थक है। बुद्ध की आँखों में क्या झलक रहा है, वह हमें खोजना चाहिए। बुद्ध के शब्दों में क्या झलक आ रही है, वह तो बहुत दूर की बात है। बुद्ध की आँखे बिल्कुल खजाने के पास है।

आचार्य सत्यप्रकाश
आचार्य, आर्ष महाविद्यालय
गुरुकुल कुरुक्षेत्र

ठीक कहते हैं बौद्ध कि उस दिन का प्रवचन पूरा हो गया। ऐसा मधुर प्रवचन बुद्ध ने दोबारा दिया भी नहीं। उस दिन लोग हंसते हुए लौटे होंगे। उन्होंने कहा -बुद्ध ने भी खूब मजाक किया। यह भी कोई बात थी ? यदि ऐसा ही प्रवचन सुनना था तो अपने घर में ही सुन लेते। पक्षी वहाँ भी बैठते हैं वातायन पर और फड़फड़ाते हैं और उड़ जाते हैं। ऐसा बुद्ध ने नया क्या किया ?

आपके वातायन पर भी पक्षी बैठते हैं लेकिन आपने कब उन्हें देखा ? फड़फड़ाते हैं पंख, आपने कब अपने पंखों की स्मृति उनसे पायी ? उड़ते हैं आकाश में, कब उड़ने की आकांक्षा आपको पकड़ी ? कब आपको आकाश दिखाई पड़ा ?

बुद्ध जैसे लोगों की जरूरत है उसको दिखाने की, जो बिल्कुल प्रकट है। जो बिल्कुल आपके पास ही गड़ा है। आपके चूल्हे की बगल में जो खजाना है, उसके लिए ही आपको आवाजें देनी पड़ती है। आपके पास भी खोजना हो तो दूर के रास्ते से लाना पड़ता है। आपको निकट भी बताना हो तो बड़ी यात्रा करवानी पड़ती है क्योंकि दूर को आप थोड़ा समझ भी लेते हैं। वासना दूर को समझ पाती हैं। ध्यान पास को समझ पाता है। ध्यान निकट की खोज है, वासना दूर की खोज है।

यदि मैं आपसे कहूँ कि आपके भीतर ही परमात्मा बैठा है, आप सुन लेंगे लेकिन भरोसा नहीं करेंगे इसलिए सारे मत कहते हैं कि परमात्मा आकाश में है, सातवें आसमान में है, क्षीरसागर में है, कैलाश पर्वत पर है तब आपके हाथ जुड़ते है, आपका सिर झुकता है। परमात्मा दूर हो तो शायद हो भी लेकिन आपके भीतर परमात्मा है ? यह मान ही नहीं सकते आप। आपके भीतर परमात्मा हो सकता है ? यह बात भरोसे की ही नहीं। और बुद्ध जैसे कुछ पुरुष निरन्तर कोशिश कर रहे हैं आपको जगाने की, जो आपके बिल्कुल पास है। जैसे मछली के पास सागर है, वैसे आपके पास सबकुछ है।

शास्त्र तो जीवन्त रूप में आपके चारों तरफ पक्षियों के उड़ने में, फूलों के खिलने में, आकाश में बादलों के तैरने में, आपकी आँखों में, बच्चे के हँसने में, सब तरफ मौजूद है। शास्त्र सब तरफ खुदे हैं, सन्देश चारों तरफ लिखा है। द्वार-द्वार, गली-गली, कूचे-कूचे, पत्थर-पत्थर पर। बस आपको रूककर देखने की जरूरत है। उस सुबह बुद्ध रुके, चुपचाप उस पक्षी की तरफ देखते रहे, पक्षी उड़ गया और उन्होंने कहा- '**आज का प्रवचन पूरा हुआ।**' समाप्त।

मिथ्या मनुष्य के जीवन में सबसे बड़ी जटिलता पैदा कर देती है।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ

*प्रिय पाठकों, गुरुकुल के पूर्व छात्र जो अब समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं। गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त कर वैदिक संस्कृति और वेदों का प्रचार-प्रसार कर समाज को नई दिशा दे रहे हैं, ऐसे महानुभावों हेतु '**गुरुकुल-दर्शन**' द्वारा '**गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ**' नाम से यह स्तम्भ आरम्भ किया गया है। इसके अन्तर्गत गुरुकुल कुरुक्षेत्र के पूर्व छात्रों के अनुभव, अध्ययन के समय की मधुर स्मृतियों को प्रकाशित किया जाएगा। आशा करते हैं कि आपको यह स्तम्भ पसंद आएगा।*

प्रो. वेदकुमार 'वेदालंकार'
डॉ. पतंगे हॉस्पीटल, पतंगे रोड
मु. पो.-उमरगा, जिला-उस्मानाबाद
महाराष्ट्र-413606

गतांक से आगे... जब मैं सातवीं-आठवीं कक्षा में पढ़ता था, उन दिनों गुरुकुल में एक व्यक्ति रहता था। वह संन्यासी था, किन्तु हमेशा अपने पास एक बंदूक रखता था। कभी-कभी मुझे भी शिकार-कला दिखाने जंगल में ले जाता था। कभी खरगोश तो कभी जंगली सूअर मार गिराता था। निशाना उसका एकदम सटीक बैठता था। उसके बताये अनुसार वह पहले फौज में था। अवश्य ही वह एक रहस्यमयी व्यक्ति था। वह कभी-कभी हमारे कमरे में आकर हमारी अलमारी में नारियल जितने मोटी लोहे के कुछ गोले रख जाता था और शाम को आकर एकाध गोला ले जाता था। यह गोले क्या वस्तु हैं, हमें तब समझ में नहीं आता था, किन्तु आज लगता है कि वे बड़े-बड़े बम रहे होंगे। यह 1942 से 43 का समय रहा होगा उन दिनों देशप्रेमी, क्रान्तिकारी लोग अंग्रेजी शासन से सशस्त्र विद्रोह कर रहे थे। अनुमान है कि वह संन्यासी कोई क्रान्तिकारी रहे होंगे, जो पकड़े जाने के डर से हमारे कपड़ों में बम छिपा जाते थे। फिर एक दिन वह अचानक गायब हो गये, उसके बाद उन्हें मैंने कभी नहीं देखा।

एक बार मैंने असत्य का सहारा लिया था। उसका मुझे आज तक पश्चाताप है। मुझे हॉकी खेलना बहुत भाता था, किन्तु गुरुकुल की हॉकी टीम में मेरा चुनाव नहीं हो पाया। तब हॉकी और बॉल पाने के लिए यह वाम-मार्ग चुना कि मैंने एक अर्जी लिखी। उन दिनों पं. रघुबीर जी शास्त्री सामान-भंडार के मुख्य थे। मुझे ज्ञान था कि मुझे हॉकी मिलने से रही। तब मैंने अपनी अर्जी पर स्वयं ही शास्त्री जी जैसे हस्ताक्षर कर दिये। परिणामतः सामान गृह से मुझे हॉकी-बॉल मिल गये, किन्तु यह सुविधा अन्य साथियों की आंखों में खटकती रही। एक दिन बात शास्त्री जी तक जा पहुँची। सोचा था- बड़ी पिटाई होगी, किन्तु मेरे पश्चाताप के आँसू देखकर भावुक शास्त्री जी पिघल गये। तब से जीवन-भर कोई अनियमित कार्य करने से मैं बचता रहा हूँ, यह भी शायद उस अनियमितता का शुभ परिणाम रहा होगा।

मार्च / अप्रैल में गुरुकुल का वार्षिकोत्सव मनाया जाता था। उत्सव पर अधिकतर विद्यार्थियों के माता-पिता आते थे। पंजाब, दिल्ली, संयुक्त प्रान्त (यू.पी.) व निकटवर्ती ग्राम, नगरों से अभिभावक आ जाते थे किन्तु सुदूर हैदराबाद राज्य से कौन अभिभावक आता? मेरे पिता तो दस वर्षों में एक-दो बार ही गुरुकुल आये होंगे, माता जी तो कभी नहीं आयीं। वार्षिकोत्सव पर एक छोटा सा मेला या बाजार लगाया जाता था जहाँ खिलौने, मिठाइयाँ, जैसी वस्तुएँ उपलब्ध होती थीं। जिस विद्यार्थी के पिताजी, चाचाजी या भाई कोई भी आया हो, वे विद्यार्थी उनकी उंगली पकड़कर बाजार में घूमा करते और अपनी पसन्द की चीजें ले लेते थे। हम जैसे अभागे बालक सूनी दृष्टि से उन्हें देखा करते थे।

उन दिनों गुरुकुल में एक वृद्ध व्यक्ति रहते थे, जिन्हें हम '**लालाजी**' कहते थे। ये लालाजी बहुत उदार-हृदय व्यक्ति थे। वे हम जैसे निराश बालकों का हाथ पकड़कर बाजार ले जाते थे और मनचाही वस्तु ले देते थे।

वार्षिकोत्सव के समय बड़े-बड़े वैदिक पंडित, विद्वान् और भजनोपदेशक पधारते थे। विद्वानों के तर्क से बोझिल भाषणों का अर्थ हम बालक भला क्या समझते, किन्तु भजन गायक के गीतों का, साथ बजती ढोलक का और छल्ले वाले चिमटे का मिला-जुला नाद हमें बहुत आनन्दित करता था। यही नहीं, उन गीतों में छिपा हुआ सामाजिक संदेश व हास्य-व्यंग्य भी हम अच्छी तरह समझते थे। भजनोपदेशकों के दो-चार गीतों की कुछ पंक्तियाँ तो मुझे आज भी याद हैं :-

भारत में अब ना कोई गोपाल दिखाई दे।
गौ माता के खून से धरती लाल दिखाई दे।।

महात्मा गांधी की अहिंसा की महिमा भजनोपदेशक जी यों गाते थे :-

घूम रहा दिन-रात सभी संसार चक्कर में।
सूरज, चन्दर, पृथ्वी और आकाश चक्कर में।।
चक्कर में है महात्मा गांधी, अहिंसा की मर्यादा बांधी।
इस हथियार के आगे सब हथियार चक्कर में।। ...क्रमशः

सत्पुरुषों की मित्रता कभी जीर्ण नहीं होती।

गुरुकुल का वेद प्रचार विभाग कर रहा है समाज से बुराइयों का अन्त

अगस्त में 10 विद्यालयों में योग एवं जीवन निर्माण शिविर तथा 25 विद्यालयों में किया भजनोपदेश कार्यक्रम

कुरुक्षेत्र, 31 अगस्त 2017 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र के संरक्षक एवं हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी तथा प्रधान कुलवंत सैनी जी के ओजस्वी मार्गदर्शन में विगत 5 वर्षों से चल रहे वेद प्रचार अभियान तेजी से आगे बढ़ रहा है। अगस्त 2017 में वेद प्रचार विभाग के योग शिक्षकों ने 10 विद्यालयों में आर्यवीर/वीरांगना योग एवं जीवन निर्माण शिविर लगाये वहीं 25 विद्यालयों में गुरुकुल के भजनोपदेशकों द्वारा हवन एवं भजनोपदेश व सत्संग का कार्यक्रम किया गया।

वेद प्रचार विभाग के नवनियुक्त अधिष्ठाता समरपाल आर्य ने बताया कि अगस्त 2017 माह के अंतर्गत गुरुकुल के वेद प्रचारकों ने राजकीय उच्च विद्यालय देवीदासपुरा, अग्रसेन सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, सैक्टर-13 कुरुक्षेत्र, राजकीय माध्यमिक विद्यालय बहारी मोहल्ला, कुरुक्षेत्र, पूजा सीनियर सैकेण्डी स्कूल, पुलिस लाइन, कुरुक्षेत्र, दीपक पब्लिक स्कूल, बौरीपुरी, नेशनल पब्लिक स्कूल शाहाबाद, राजकीय उच्च विद्यालय, सुरखपुर, राजकीय उच्च विद्यालय, जन्धेड़ी, राजकीय वरिष्ठ विद्यालय, नंगला, राजकीय वरिष्ठ विद्यालय, सिम्भालखी में 7 दिवसीय आर्यवीर योग एवं जीवन निर्माण शिविरों का आयोजन किया वहीं सनराइज सीनियर सैकेंडरी स्कूल, कोल्हापुर, राजकीय माध्यमिक विद्यालय किठाना, ब्रह्मानन्द सीनियर सैकेंडरी स्कूल कौल, राजकीय उच्च विद्यालय सांकरा, राजकीय विद्यालय तारागढ़, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सौंगरी गुलियाणा, सरछोटूराम सीनियर सैकेंडरी स्कूल रामपुरा, राजकीय वरिष्ठ विद्यालय मून्दडी, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय टयौंढ़ा, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ईसाक, राजकीय विद्यालय हरसौला, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बिहौली, राजकीय कन्या विद्यालय जाखौली, राजकीय कन्या विद्यालय फरल, प्रोफेसर शेर सिंह मैमोरियल पब्लिक स्कूल चन्दलाना, एवरग्रीन पब्लिक स्कूल पटेल नगर, कैथल, राजकीय वरिष्ठ विद्यालय कैथल, महर्षि दयानन्द सीनियर सैकेंडरी स्कूल

उमरी, ज्ञानदीप सीनियर सैकेंडरी स्कूल क्योड़क, सरोजनी नायडू पब्लिक स्कूल क्योड़क सहित गांव आर्य समाज, बालू, दुब्बल, ज्योतिसर, बीड़ पीपली, छपरा, छपरी, देवीदासपुरा, अहमदपुर, खानपुर कौलियां, चीका, भुन्ना, खुशहाल माजरा, डंगी, पावला, जन्धेड़ी, रावा, प्यौदा, बीड़ मथाना, मुकरपुर, दुगारी, ठसका मीरां जी, दयालपुर, मुंडाखेड़ा, सिरसला, रामशरण माजरा, वाल्लड़, धनौरा, रावगढ़, भौर सैयदा सहित अनेक गांवों में हवन व भजनोपदेश के कार्यक्रम किये और लोगों में फैली भ्रान्तियों को दूर करने का प्रयास किया। वेद प्रचार विभाग में लगभग 20 योग शिक्षक, प्रचारक एवं भजनोपदेशक हैं जो प्रतिदिन गांव-गांव व घर-घर जाकर लोगों को वेदों में निहित ज्ञान एवं ऋषि दयानन्द का अमर संदेश देते हैं। प्रधान कुलवंत सैनी के निर्देशानुसार कुरुक्षेत्र जिला में आर्य समाज के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक महाशय जयपाल आर्य व तृषपाल विमल अपने दल के साथ जब गांव में जाकर आर्य समाज के सिद्धान्तों और पाखण्ड का भंडाफोड़ करते हैं तो देखते ही देखते लोगों का समूह एकत्रित हो जाता है। वहीं कैथल जिले में जसविन्द्र आर्य व महिन्द्र आर्य भजनोपदेश के महाध्यम से समाज में फैली बुराइयों को दूर कर रहे हैं। हर किसी के होठों पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र के इस पुनीत कार्य की प्रशंसा होती है। क्षेत्र के लोगों का भरपूर सहयोग वेद प्रचार विभाग के प्रचारकों को प्राप्त होता है।

आर्यवीर दल के व्यायाम शिक्षक एवं वेद प्रचार अधिष्ठाता समरपाल आर्य के दिशा निर्देशन में योग शिक्षक चन्द्रपाल आर्य, सोनू अर्य, सचिन आर्य, जितेन्द्र आर्य, जयराम आर्य, प्रवीण आर्य, भीष्म आर्य, आर्यमित्र आर्य, सोहनवीर, विशाल आर्य, कनिष्क गांव-गांव के विद्यालयों में जाकर 7 दिवसीय आर्य वीर योग एवं जीवन निर्माण शिविर लगाते हैं। इन शिविरों में युवक व युवतियों को जहाँ आत्मरक्षा के गुर सिखाए जाते हैं वहीं, पी.टी. डम्बल, लेजियम, जूड़ो-कराटे आदि का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। इतना ही नहीं ऊँचे-ऊँचे मानव स्तूपों का निर्माण, मानव पुल का निर्माण, सुदर्शन चक्र, अचम्भित करने वाले स्तूप भी इन शिविरों में युवाओं को सिखाए जाते है।

इन शिविरों में समाज में फैली कन्या भ्रूण हत्या, नशा, अज्ञानता, पाखण्ड, गुरुडम जैसी बुराईयों को समाप्त करने के लिए

युवाओं को प्रेरित किया जाता है। वहीं उन्हें आपसी भाईचारा दृढ़ करने, राष्ट्र प्रेम का उत्साह जगाने, वेदों में निहित ज्ञान और वैदिक सभ्यता व संस्कृति को पुन: अपनाने का आह्वान किया जाता है। इन शिविरों से ही गुरुकुल कुरुक्षेत्र से अनेक आर्य वीरांगनाएं और अनेक आर्यवीर शाखा नायक तैयार हो चुके हैं जो गांव-गांव में प्रात: व सायं अन्य युवा एवं युवतियों को अपने साथ जोड़कर वैदिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

क्रांतिकारी भजनोपदेशक महाशय जयपाल आर्य के साथ स्वयं समरपाल आर्य, जगदीश आर्य, तृषपाल विमल, सुभाष आर्य गांव-गांव में जाकर हवन, यज्ञ व भजनोपदेश के माध्यम से समाज में फैले अज्ञानता के अंधकार को दूर कर रहे हैं साथ ही लोगों को एक बार फिर से वेदों के रास्ते पर लौट आने का सफल प्रयास कर रहे हैं। युवा भजनोपदेशक जसविन्द्र आर्य व महिन्द्र आर्य कैथल जिले के राजकीय उच्च विद्यालय फरल, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बाल, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पाडला, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्वालय चंदाना, राजकीय उच्च विद्यालय कसान,

राजकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय कैलरम, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कैलरम, राजकीय उच्च विद्यालय तारागढ़, आरती स्कूल सौंगरी, राजकीय वरिष्ठ विद्यालय गुलियाना सहित अन्य विद्यालयों में कार्यक्रम किये। जसविन्द्र आर्य व महिन्द्र आर्य हवन, यज्ञ व भजनोपदेश के माध्यम से युवाओं में भारतीय सभ्यता और संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर उन्हें सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। वहीं गुरुकुल के पैंटर बलदेव आर्य अपनी कलम के माध्यम से सुन्दर और प्रेरक स्लोगनों से लोगों को बुराइयों से दूर रहने का संदेश दे रहे हैं। बलदेव द्वारा गांव बचकी, मांडी, पीपली माजरा, हमीरा फार्म, ईस्सरहेड़ी, सतोड़ा, बकाली आदि गांवों में लेखन कार्य किया गया। हरियाणा ही नहीं वरन् पूरे भारतवर्ष में गुरुकुल के वेद प्रचार विभाग की सराहना की जाती है जिसका पूरा श्रेय आचार्य देवव्रत जी एवं प्रधान कुलवंत सिंह सैनी को जाता है क्योंकि उन्ही के दिशा-निर्देशन में वेद प्रचार पूरा प्रकल्प चल रहा है।

कोई भी कार्य करने....पृष्ठ 14 का शेष

विचार शक्ति निष्पक्ष तथा सर्वांगीण होनी चाहिए।

किसी कार्य को केवल विचार पर भी न छोड़ देना चाहिए। कार्यरूप में परिणित हुए बिना योजनाएं चाहे वे कितनी ही अच्छी क्यों न हों, लाभ नहीं दे सकतीं। उन्हें क्रियारूप भी मिलना चाहिए। विचार की आवश्यकता वैसी ही है, जैसे रेलगाड़ी को स्टेशन पार करने के लिए सिग्नल की आवश्यकता होती है। सिग्नल का उद्देश्य केवल यह है कि ड्राइवर यह समझ ले कि रास्ता साफ है अथवा आगे कुछ खतरा है? विचारों के द्वारा भी ऐसे ही संकेत मिलते हैं कि वह कार्य उचित और उपयुक्त है या अनुचित और अनुपयुक्त? यह समझ जाने पर उस विचार को क्रियारूप दे देना चाहिए। बुरे परिणाम की जहाँ आशंका हो उन कार्यो को छोड़कर शेष विचार आचरण में प्रयुक्त होने चाहिए, तभी कोई काम बन सकता है। **महात्मा गांधी** का कथन है-

'आचरणरहित विचार कितने ही अच्छें क्यों न हो! उन्हें खोटे सिक्के की तरह समझना चाहिए।'

इससे यह सिद्ध होता है कि कोरा आचरण अपने आप में पूर्ण नहीं। उसी प्रकार केवल विचार से भी कोई काम नहीं बनता। आत्म सफलता के लिए दोनों की आवश्यकता समान रूप से है। कोई बुद्धिमान और सद्ज्ञान व्यक्ति आवश्यकता पड़ने पर रास्ता तो बता सकता है, लेकिन किसी के बदले रास्ता नाप नहीं सकता। वह रास्ता तो स्वयं अपने पैरों से चलकर पूरा करना होगा। जिस प्रकार अपना खाया अन्न अपने लिए ही उपयोगी होगा, दूसरे का खाया अन्न हमारे स्वास्थ्य के लिए कब उपयोगी हुआ है?

इस संसार में आचरण करने वाले बहुत हैं, पर उन पर विचार करने वाले बहुत कम हैं। जो मनुष्य विचारपूर्वक कार्य करता है, वह केवल आचरण करने वाले हजार पुरुषों से अच्छा है।

यह उद्‌बोधन सांसारिक सफलता, सामाजिक व्यवस्था तथा नैतिक सदाचरण सभी दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है कि मनुष्य कुछ करने के पूर्व उस पर विचार कर लिया करें। भली प्रकार विचार किए हुए कर्म सद् फलकारी होते हैं, उसने ठोस लाभ मनुष्य जाति को मिलते हैं इसके विपरीत बिना विचार किये हुए काम करने से बाद में पश्चाताप ही भुगतना पड़ता है। अत: आप भी अपने जीवन में कभी कोई काम बिना सोच-विचार के न करें।

सज्जनों की मैत्री का जन्म आपस की बातचीत से ही हो जाता है।

रक्षाबंधन पर्व पर गुरुकुल में नवप्रविष्ट छात्रों का यज्ञोपवीत संस्कार
राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने जीवन में यज्ञोपवीत के महत्त्व पर डाला प्रकाश

कुरुक्षेत्र : माईक्रोटेक ओकाया कंपनी, नई दिल्ली के निदेशक **सुबोध गुप्ता** ने कहा कि संस्कार हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग हैं, इनके बिना मानव जीवन में पूर्णता असम्भव है। उपनयन संस्कार विद्यार्थी जीवन की अमूल्य निधि है। वे सोमवार को गुरुकुल कुरुक्षेत्र में **उपनयन संस्कार एवं पौधारोपण समारोह** की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किए, जबकि समारोह में हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल व गुरुकुल कुरुक्षेत्र के संरक्षक आचार्य देवव्रत मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। गुप्ता ने कहा कि मानव की शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक उन्नति के लिए जन्म से मृत्युपर्यन्त तक भिन्न-भिन्न समय पर अनेक संस्कारों की सुन्दर व्यवस्था की गई है, जिसमें उपनयन संस्कार का विशिष्ट महत्त्व है, क्योंकि यह भारतीय संस्कृति में अति आवश्यक व पवित्र माना गया है। उन्होंने कहा कि जब हमारे जीवन में कुसंस्कारों की आंधी आती है, तो सुसंस्कार ही जड़ का कार्य करके मनुष्य को उखड़ने से बचाते है।

उपनयन हर व्यक्ति को धारण करने का अधिकार है, परन्तु जो व्यक्ति बड़ों के आदेश का पालन नहीं करता वह उपनयन धारण करने का अधिकारी नहीं है इसलिए हमें इसके महत्व को समझते हुए इसका सम्मान करना चाहिए, ताकि हमारे जीवन में इसकी गरिमा बनी रहे। आज हम पाश्चात्य संस्कृति को देखकर अपनी सभ्यता व संस्कृति को भूलते जा रहे है इसलिए सुसंस्कारों को जीवन में अपनाने की अत्यन्त आवश्यकता है। गुरुकुल परिसर में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत व सुबोध गुप्ता ने अपने कर-कमलों द्वारा "**थाइक्सपांडा**" का पौधा रोपित कर पौधरोपण अभियान का शुभारम्भ किया, इसके उपरान्त गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सैनी, सुबोध गुप्ता, ओमप्रकाश गुप्ता, सौरभ गुप्ता, श्रीमती मेघा गुप्ता, सुरेन्द्र गर्ग, वेद प्रकाश गुप्ता ने भी पौधारोपण किया। गुरुकुल प्रबन्ध समिति के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी ने अध्यक्ष के रूप में उपस्थित सुबोध गुप्ता को शाल ओढ़ाकर, मधु, उपहार व स्मृति-चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया तथा सुबोध गुप्ता ने हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत को भी सम्मानित किया। उन्होंने गुरुकुल को प्रति वर्ष 11 लाख रूपये छात्रों की उच्च शिक्षा हेतु प्रदान करने की घोषणा भी की।

हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल व गुरुकुल के संरक्षक आचार्य देवव्रत ने यज्ञोपवीत के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यज्ञोपवीत संस्कार बालक का दूसरा जन्म माना गया है, क्योंकि यह ब्रह्मचर्यव्रत एवं विद्याध्ययन का प्रतीक है। मनुष्य पर तीन ;ण हैं। मानव यज्ञादि एवं ईश्वर की उपासना से **देवऋण**, विद्याध्ययन, विद्वानों का सत्कार तथा वेदानुकूल आचरण से **ऋषिऋण** और माता-पिता की सेवा व योग्य संतान उत्पत्ति से **पितृऋण** से उऋण होता है। उन्होंने कहा कि इन तीनों ऋणों की स्मृति यज्ञोपवीत के तीन सूत्रों से होती है। गुरु-शिष्य का अन्तेवासी सम्बन्ध हैं, क्योंकि वह अपने शिष्य को पाठशाला रूपी गर्भ में धारण करता है, जहाँ शिष्य उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपने अर्जित ज्ञान को सकल विश्व में फैलाने का संकल्प लेता हैं। उन्होंने कहा कि उपनिषदों में आचार्य को अग्नि की संज्ञा दी गई हैं, क्योंकि आचार्य ज्ञान रूपी अग्नि से बालक को संस्कारित व शिक्षित करके समाजोपयोगी बनाता है। उन्होंने कहा कि आज गुरुकुल कुरुक्षेत्र के छात्र एनडीए व आईआईटी के अतिरिक्त देश की विख्यात उच्च संस्थाओं में प्रवेश लेकर गुरुकुल का नाम रोशन कर रहे हैं। गुरुकुल कुरुक्षेत्र में गायों की नस्ल सुधार का बीड़ा उठाते हुए नस्ल सुधार के क्षेत्र में अनेक शोध कार्य आरम्भ किये हैं ताकि गाय का अस्तित्व बचाया जा सके। उन्होंने बताया कि गुरुकुल जैविक कृषि के क्षेत्र में भी अहम् योगदान दे रहा है।

गुरुकुल के निदेशक व प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि पर्यावरण को हरा-भरा व स्वच्छ रखना प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक कर्त्तव्य है। पौधारोपण पर्यावरण संरक्षण में अहम भूमिका निभाता है इसलिए हमें पौधे लगाने के साथ-साथ इनकी देखभाल का भी उत्तरदायित्व भी निभाना चाहिए तभी बिगड़ते पर्यावरण को पटरी पर लाया जा सकता है। हर व्यक्ति को एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए ताकि पृथ्वी पर जीवन कायम रहे। उन्होंने कहा कि वृक्ष ऐसे साथी हैं, जो स्वयं कार्बन डाईऑक्साइड रूपी विष को पीकर मनुष्य को ऑक्सीजन रूपी अमृत प्रदान करते हैं इसलिए वृक्षों का संरक्षण व संवर्धन अनिवार्य है तभी हम स्वस्थ रह सकते हैं। गुरुकुल के एन.सी.सी कैडेट्स ने विभिन्न प्रकार के 200 पौधे रोपित कर वृक्षारोपण अभियान को गति प्रदान की।

उपनयन संस्कार को नन्दकिशोर शास्त्री व दयाशंकर शास्त्री ने वैदिक मंत्रोच्चारण से सम्पन्न कराया, जिससे सम्पूर्ण वातावरण सुवासित हो उठा। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने अपने मधुर गीतों व भाषण द्वारा सभी उपस्थित श्रोताओं को रसासिक्त कर दिया। गुरुकुल के छात्रों ने मनोहारी योगासन, जिम्नास्टिक व लकड़ी मलखम्भ पर हैरतअंगेज करतब प्रस्तुत कर खूब वाहवाही लूटी। समारोह में गुरुकुल प्रबंध समिति के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी, प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता, उप-प्राचार्य शमशेर सिंह, प्रेस प्रवक्ता डॉ. श्यामलाल शर्मा, वेदप्रकाश गुप्ता, अनीता गुप्ता, सौरभ गुप्ता, आचार्यवृन्द, छात्रगण व उनके अभिभावक उपस्थित थे।

गुरुकुल का अनुभव बेस्ट शूटर व आशीष बेस्ट कैडेट बना

कुरुक्षेत्र, 24 अगस्त 2017 : गुरुकुल के एनसीसी कैडेट आशीष आर्य को एनसीसी अंबाला ग्रुप में बेस्ट कैडेट के पुरस्कार से नवाजा गया है वहीं गुरुकुल का ही कैडेट अनुभव चौधरी इंटर ग्रुप फायरिंग कम्पीटीशन में प्रथम स्थान पर रहा। **सह-प्राचार्य शमशेर सिंह** ने जानकारी देते हुए बताया कि कैडेट आशीष आर्य ने चंडीगढ़ निदेशालय की ओर से फायरिंग में गोल्ड मेडल प्राप्त किया था। आशीश को उसकी वर्ष भर की फायरिंग, ड्रिल, मेप रीडिंग, युद्ध कौशल, शारीरिक दक्षता के आधार पर मूल्यांकन करते हुए ग्रुप कमांडर ब्रिगेडियर जी.पी.एस. संधु ने बेस्ट कैडेट के पुरस्कार से सम्मानित किया। एनसीसी अधिकारी लेफ्टिनेंट श्रवण कुमार ने बताया कि गुरुकुल के अनुभव चौधरी को 14 से 23 अगस्त तक रुपनगर, पंजाब में लगे एनसीसी कैम्प में इंटर ग्रुप फायरिंग कम्पीटीशन में प्रथम पुरस्कार मिला। बता दें कि इस कम्पीटीशन में अंबाला ग्रुप पहले स्थान पर रहा और अनुभव चौधरी अंबाला ग्रुप टीम में शामिल था। प्रधान **कुलवन्त सिंह सैनी, प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता एवं सह-प्राचार्य शमशेर सिंह** ने दोनो कैडेट्स को मिठाई खिलाकर आशीर्वाद व शुभकामनाएं दी। वहीं एन.सी.सी. अधिकारी लेफ्टिनेंट श्रवण कुमार को भी इस उपलब्धि पर बधाई दी। गुरुकुल के संरक्षक एवं हिमाचल प्रदेश के **महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी** ने गुरुकुल परिवार को दूरभाष पर शुभकामनाएं दी।

खण्ड स्तरीय प्रतियोगिता में गुरुकुल ओवरऑल चैम्पियन

कुरुक्षेत्र, 23 अगस्त 2017 : द्रोणाचार्य स्टेडियम कुरुक्षेत्र में सम्पन्न हुई खण्ड स्तरीय प्रतियोगिता में गुरुकुल कुरुक्षेत्र ओवरऑल चैम्पियन रहा। गुरुकुल की फुटबॉल, हैण्डबॉल की टीमें जहाँ तीनों वर्गो में प्रथम स्थान पर रही वहीं बॉस्केटबाल तथा सर्किल कबड्डी में भी गुरुकुल की अंडर-17 टीम प्रथम रही। **गुरुकुल के संरक्षक एवं हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत** जी ने भी सभी खिलाड़ियों को दूरभाष पर शुभकामनाएँ प्रेषित की हैं।

गुरुकुल के **सह-प्राचार्य शमशेर सिंह** ने बताया कि 17 से 20 अगस्त 2017 तक खण्ड स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें थानेसर खण्ड के सभी स्कूलों की टीमों भाग लिया। गुरुकुल कुरुक्षेत्र की ओर से डीपीई देवीदयाल के नेतृत्व में खिलाड़ी प्रतियोगिता में पहुंचे। फुटबाल के फाइनल मैच में गुरुकुल की टीम ने एस.के.एस. गुरुकुल की टीम को 6-0 से पराजित किया। हैण्डबॉल में अंडर-19 में डीएवी स्कूल की टीम को करारी शिकस्त देते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। बॉस्केटबॉल में अग्रसेन पब्लिक स्कूल को गुरुकुल के खिलाड़ियों ने करारी मात दी। योगासन में गुरुकुल की अंडर-17 व अंडर-19 टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। एथलेटिक्स में अंडर-14, अंडर-17 तथा अंडर-19 में कुल 25 इवेंट में प्रथम स्थान पर 23 इवेंट में द्वितीय स्थान पर तथा 6 इवेंट में तृतीय स्थान प्राप्त किया।

गुरुकुल के **प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता एवं सह-प्राचार्य शमशेर सिंह** ने सभी खिलाड़ियों को मिष्ठान्न खिलाकर बधाई व आशीर्वाद दिया। वहीं डीपीई देवीदयाल, राजेन्द्र सिंह, फुटबॉल कोच भूपेन्द्र, जतिन आर्य, बॉस्केटबॉल कोच अरुण आर्य, हैण्डबॉल कोच राजेश आर्य, कबड्डी कोच रजत आर्य तथा योग के प्रशिक्षक दिनेश आर्य को भी बधाई दी।

राजकीय उच्च विद्यालय ईशाक में लगा सात दिवसीय शिविर

कुरुक्षेत्र, 3 अगस्त 2017 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र के **संरक्षक एवं हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत** व गुरुकुल के **प्रधान कुलवंत सैनी** के ओजस्वी मार्गदर्शन में चल रहे वेद प्रचार अभियान के तहत राजकीय उच्च विद्यालय, ईशाक में **सात दिवसीय आर्यवीर दल योग एवं जीवन निर्माण शिविर** का आयोजन किया गया जिसमें गुरुकुल के योग प्रशिक्षक सचिन आर्य एवं भीष्मपाल आर्य द्वारा विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया गया। आज इस शिविर का भव्य समापन हुआ जिसमें गुरुकुल के वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता भजनोपदेशक महाशय जयपाल आर्य व जगदीश आर्य मुख्य रूप से उपस्थित रहे। विद्यालय में पहुंचने पर वेद प्रचार विभाग की टीम का **प्रिंसीपल वीरेन्द्र जी** सहित सभी शिक्षकों ने फूल-मालाओं से स्वागत किया। इसके उपरान्त विद्यार्थियों द्वारा शिविर में सीखे गये सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, डम्बल, लेजियम, स्तूप निर्माण, योगासन आदि का हैरतअंगेज प्रदर्शन किया गया जिसे देख कार्यक्रम में उपस्थित बच्चों के परिजनों के तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा विद्यालय परिसर गुंजा दिया। महाशय जयपाल आर्य ने देशभक्ति गीतों के माध्यम से बच्चों को राष्ट्रप्रेम और वीरों के गौरवशाली इतिहास से परिचित कराया। गुरुकुल के प्रचारकों द्वारा **वीरेन्द्र जी को** महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का **स्मृति-चिन्ह** भेंट कर सम्मानित किया। प्राचार्य ने अपने वक्तव्य में गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा चलाये जा रहे वेद प्रचार अभियान की सराहना की और भविष्य में भी गुरुकुल को पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया।

जो व्यक्ति अकेले में तुम्हें तुम्हारे दोष बतावे, उसे अपना मित्र समझो।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में शैक्षणिक स्तर पर दो प्रकल्प चलते हैं। सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम के अनुसार 10+2 तक का विद्यालय है जो ISO 9001: 2008 प्रमाणित संस्थान है। इस पाठ्यक्रम के अनुसार यहाँ लगभग 1500 विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। दूसरा **आर्ष महाविद्यालय** है जिसमें वैदिक व्याकरण व वैदिक साहित्य का अध्ययन कराया जाता है। इन शिक्षण प्रकल्पों के अतिरिक्त शिक्षा, समाज सेवा व सामाजिक चेतना को ध्यान में रखते हुए जो विविध गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं, इनकी संक्षिप्त झलक निम्न प्रकार है -

प्रशासनिक विभाग : आधुनिक तीन मंजिला प्रशासनिक भवन में अतिथियों के लिए 250 कुर्सियाँ एवं सुविधायुक्त वातानुकूलित सभागार व कार्यालय हैं।

आर्ष महाविद्यालय : वैदिक धर्म एवं वेदों के प्रचार हेतु आर्ष पाठ विधि से व्याकरण एवं वेद के विद्वान् तैयार किये जा रहे हैं।

वातानुकूलित संगणक प्रयोगशालाएँ : गुरुकुल में वातानुकूलित कम्प्यूटरीकृत शिक्षा-व्यवस्था है। यहाँ 75 कम्प्यूटर हैं जिन पर छोटे-बड़े छात्रों हेतु अलग-अलग व्यवस्था है। इनमें प्रोजेक्टर और वाई-फाई की सुविधा भी है।

वातानुकूलित भाषा व विज्ञान प्रयोगशालाएँ : शिक्षा को व्यावहारिक रूप देने व छात्रों के पूर्ण विकास हेतु बहुतकनीकी यन्त्रों से युक्त व दृश्य-श्रव्य यंत्रों से सुसज्जित प्रयोगशालाएँ हैं।

वातानुकूलित पुस्तकालय व वाचनालय : छात्रों के विकास हेतु वेद, उपनिषद्, वेदांग एवं स्वतन्त्रता सेनानियों का इतिहास व महापुरुषों की जीवनियाँ तथा विज्ञान, दर्शन सम्बन्धी हजारों पुस्तकें व सी.डी. आदि हैं। 21 दैनिक समाचार पत्र एवं 75 साप्ताहिक व मासिक पत्रिकाएँ आती हैं।

अत्याधुनिक गोशाला : छात्रों को शुद्ध एवं पौष्टिक दुग्ध उपलब्ध कराने के लिए गुरुकुल में अत्याधुनिक गोशाला है। जहां पर विभिन्न देशी व विदेशी नस्ल की लगभग 282 गायें हैं जो प्रतिदिन 1150 लीटर दूध देती हैं।

अश्वारोहण (घुड़सवारी) : इसके लिए उत्तम नस्ल के 8 घोड़ियाँ व 1 घोड़ा है। कुशल प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है।

क्लीनिकल लेबोरेट्री : पशुओं की विभिन्न बीमारियों से संबंधित टेस्ट हेतु लैब है जहां पर अनुभवी डॉक्टर द्वारा पेशाब, खून व दूध आदि की प्रामाणिक जाँच की जाती है।

शूटिंग (निशानेबाजी प्रशिक्षण) : इसके माध्यम से गुरुकुल ने अभी तक 10 अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी राष्ट्र को दिये हैं।

एन.सी.सी (छोटे-बड़े छात्रों हेतु) : गुरुकुल एन.सी.सी. के छात्र गणतन्त्र व स्वतंत्रता दिवस की परेड में भाग ले चुके हैं तथा एन.सी. सी. के कैम्पों में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

नेशनल डिफेंस एकेडमी (एन.डी.ए.) : सेवानिवृत्त सेना अधिकारी के मार्गदर्शन में एन.डी.ए. परीक्षा की तैयारी के लिए दो एकड़ भूमि पर ऑब्स्टेकल कोर्स का निर्माण किया गया है।

एन.एस.एस विंग : राष्ट्रीय एकता व सामाजिक सद्‌भाव हेतु एन. एस.एस. द्वारा सामाजिक चेतना जागृत की जाती है।

विशाल भोजनालय : छात्रों, गुरुकुल से जुड़े सभी कर्मचारियों एवं अतिथियों हेतु विशाल भोजनालय की व्यवस्था है।

संगीतमय फव्वारे : गर्मियों की उमस से बचने एवं मनोरंजनपूर्ण स्नान के लिए आकर्षक संगीतमय फव्वारें गुरुकुल में है।

पं. अमीचन्द संगीत केन्द्र : छात्रों को मनोरंजन एवं संगीत शिक्षण हेतु भक्त अमीचन्द संगीत केन्द्र में संगीत की शिक्षा-व्यवस्था है।

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय : गुरुकुल में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय है जो गम्भीर रोगों के उपचार के साथ चिकित्सा सम्बन्धी 'डिप्लोमा इन योग एंड साइंस' कोर्स भी कराता है।

धन्वन्तरि चिकित्सालय : छात्रों के शारीरिक स्वास्थ्य एवं खेलकूद में आने वाली हल्की चोट-मोच आदि के लिए आयुर्वेदिक चिकित्सालय में कुशल वैद्यों की व्यवस्था है।

वेद प्रचार विभाग : भारतीय संस्कृति एवं वेदों के प्रचार हेतु गुरुकुल में वेद प्रचार विभाग का गठन किया गया। जिसके तहत लगभग डेढ़ दर्जन प्रचारक दिन-रात विभिन्न क्षेत्रों में घूम-घूम कर लोगों को वेदवाणी और आर्य सिद्धान्तों के प्रति जागरूक कर रहे हैं। वहीं योग शिक्षकों के माध्यम से विद्यालय व कॉलेजों में योग एवं चरित्र निर्माण अभियान चलाया जा रहा है।

इनके अतिरिक्त **जैविक खाद एवं कृषि फार्म, स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी, आकर्षक पौधशाला (नर्सरी)** भी है। नवनिर्मित आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र है जिसमें आर्य भजनोपदेशक तैयार किये जाते हैं। वहीं **'गुरुकुल-दर्शन'** मासिक पत्र के माध्यम से वैदिक धर्म एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

मित्र बनाना सर्वथा सहज है, मित्रता निभाना कठिन।

यज्ञोपवीत संस्कार एवं पौधारोपण समारोह की चित्र झलकियाँ

गुरुकुल–गतिविधियाँ

खंड स्तरीय प्रतियोगिता की विजेता फुटबॉल टीम के साथ प्रधान कुलवंत सिंह सैनी, प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह व प्रशिक्षक

खंड स्तरीय प्रतियोगिता की विजेता जिम्नास्टिक टीम के साथ प्रधान कुलवंत सिंह सैनी, प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह व प्रशिक्षक

खंड स्तरीय प्रतियोगिता की विजेता बॉस्केटबाल टीम के साथ प्रधान कुलवंत सिंह सैनी, प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह व प्रशिक्षक

खंड स्तरीय प्रतियोगिता की विजेता योगा टीम के साथ प्रधान कुलवंत सिंह सैनी, प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह व प्रशिक्षक

बेस्ट कैडेट व बेस्ट शूटर का पुरस्कार प्राप्त कैडेट्स के साथ प्रधान कुलवन्त सैनी, प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह व एन. सी. सी. अधिकारी श्रवण कुमार

स्वतंत्रता दिवस पर गुरुकुल परिसर में तिरंगा फहराकर नारी-शक्ति को सम्मानित करते हुए गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी व प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता

RNI Reg.No. : HARBIL / 2015 / 64244
Postel Regn. No. HR/KKR/181/2015-2017

स्वामी– गुरुकुल कुरुक्षेत्र, कुरुक्षेत्र के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक श्री कुलवंत सिंह सैनी द्वारा क्रेजी ऑफसेट प्रिंटिंग प्रैस, सलारपुर रोड, निकट डी.एन. कालेज, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) से मुद्रित एवं गुरुकुल कुरुक्षेत्र, (निकट थर्ड गेट कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी), कुरुक्षेत्र से प्रकाशित। सम्पादक –कुलवंत सिंह सैनी

मूल्य-15रु एक प्रति (150रु वार्षिक)

प्रतिष्ठा में ______________________